ऑयल इंडिया लिमिटेड
( भारत सरकार का उद्यम )
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

# ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2017 | वर्ष 14 अंक 23

## अध्यक्ष की कलम से

सर्वप्रथम आप सभी सुधी पाठकों को नव वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएं।

इस वर्ष की 18 फरवरी को हमारी कंपनी ऑयल इंडिया लिमिटेड अपनी स्थापना के 60 वर्ष पूरे कर रही है। इस अवसर पर जरा ठहर कर पीछे देखने का अपना एक अलग ही सुख है, और इसके साथ ही भविष्य के लिए दृष्टि का निर्माण भी हो जाता है। डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों की हाइड्रोकार्बन क्षमताओं के पूर्ण दोहन के उद्देश्य के साथ कंपनी की स्थापना की गई। इन साठ वर्षों के दौरान हमारी कंपनी एक स्थानीय कंपनी से विश्वस्तरीय राष्ट्रीय अन्वेषण एवं उत्पादन कंपनी के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हुई। आज हम भारत के राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश के साथ ही पूर्वोत्तर क्षेत्र असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम एवं वैश्विक स्तर पर विश्व के विभिन्न देशों में अन्वेषण एवं उत्पादन कार्य करते हुए भारत सरकार के अधीन एक अपस्ट्रीम नवरत्न अन्वेषण एवं उत्पादन कंपनी के रूप में अपना कार्य कर रहे हैं।

आज मैं आप सभी के मध्य कंपनी की वस्तुस्थिति इसलिए साझा कर रहा हूं, जिससे आप भी आसानी से अनुमान लगा सकें कि हम किन दुर्गम हालातों में अन्वेषण एवं उत्पादन के साथ ही अपनी राजभाषा का कार्य भी कर रहे हैं। क्योंकि हमारी पहुंच जहां भी होगी वहां हम अपनी राजभाषा को भी पहुंचाएंगे ही। पूर्वोत्तर के इन सुदूर क्षेत्रों में हम अपने अन्वेषण एवं उत्पादन कार्यों के साथ ही साथ अपनी राजभाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति भी पूर्णत: कटिबद्ध हैं। यह कटिबद्धता हम अपने विस्तार के साथ ही और भी दृढ़ रूप में जारी रखेंगे ऐसा मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूं।

समस्त ऑयल परिवार की तरफ से कंपनी की स्थापना के स्वर्णिम 60 वर्षों की शुभकामनाओं के साथ ही एक बार पुन: आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं साहित मैं अपनी लेखनी को यहीं विराम देता हूँ।

जय हिन्द

**( प्राणजित डेका )**
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल

## संपादकीय

ऑयल किरण के सभी पाठकों को नूतन वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएं। वर्ष 2017 अब हम सबके लिए इतिहास हो गया है। इस वर्ष घटी कई बड़ी घटनाओं ने हमें इनसे सबक लेकर अपने भविष्य को सुधारने की बड़ी सीख दे गई है। हमारा यह काम है कि इनसे सीखते हुए हम अपने जीवन के सभी मोर्चों पर सुधारात्मक कार्यवाही जारी रखें। यह राजभाषा के कार्यान्वयन में भी लागू होता है। हम सभी से भी राजभाषा कार्यान्वयन करते समय कुछ चीजें छूट गयी होगी या फिर न चाहते हुए भी कुल गलतियां हो गई होगी। नूतन वर्ष में सुधारने के संकल्प के साथ हमें आगे बढ़ना होगा। यह संकल्प व्यक्तिगत न होकर अगर सामूहिक हो जाय तो हम सभी एक समान गति और लय से निर्धारित लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इस पल मुझे हमारे पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल विहारी वाजपेयी की कविता याद आ रही है –

"बाधाएं आती है आएं
घिरे प्रलय की घोर घटाएं
पावों के नीच अंगारे
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं
निज हाथों में हंसते-हंसते
आग लगाकर जलाना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।"

आप सभी को पुन: नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इतिश्री।

**( डॉ. शैलेश त्रिपाठी )**
हिन्दी अधिकारी

## इस अंक में


| | |
|---|---|
| अमृत मंथन | 1 |
| नया भारत / बेटी | 2 |
| झूठ की कीमत (कहानी) | 3 |
| हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाए जाने की दिशा | 4 |
| बेटी / पढ़ाई का महत्व | 5 |
| परछाई | 6 |
| हिंदी के नए अंदाज | 7 |
| प्यार / माँ का रिश्ता | 9 |
| महत्व इंसान के अर्थ का / जिंदगी | 10 |
| तोड़ती नहीं जोड़ती है हिंदी | 11 |
| लौटा दे बच्चों को उनका बचपन... | 12 |
| प्रकृति की सीख | 13 |
| बाप की पीड़ा / ईश्वर | 14 |
| ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन | 15 |
| पाइपलाइन विभाग में हिन्दी माह समारोह-2017 का आयोजन | 19 |
| ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा समारोह आयोजित | 20 |
| ऑयल, कोलकाता कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन | 21 |
| ऑयल, दुलियाजान द्वारा हास्य कवि संगम का आयोजन | 22 |
| नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 32वीं बैठक संपन्न | 23 |
| ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित | 24 |
| कोलकाता कार्यालय को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यन्वयन के लिए पुरस्कार | 24 |
| ऑयल, राजस्थान, जोधपुर में राजभाषा कार्यशाला आयोजित | 25 |
| कोलकाता कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन | 25 |
| राजभाषा अधिनियम, 1963 | 26 |



**सलाहकार**
श्री प्राणजित डेका
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
श्री दिलीप कुमार भूयां
महाप्रबन्धक (जन संपर्क)
**प्रधान सम्पादक**
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी, दुलियाजान
**संपादक मंडल**
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) कोलकाता
श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) जोधपुर
श्री नारायण शर्मा, प्रबंधक (रा. भा.) गुवाहाटी
**सम्पादन-सहयोगी**
श्री दीपक प्रसाद, श्री विजय कुमार गुप्ता, श्री दिगन्त डेका



पत्रिका में प्रकाशित लेख/रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।



**संपादकीय कार्यालय :**
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड
डाकघर : दुलियाजान 786 602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

**मुद्रक: सैकिया प्रिण्टर्स, दुलियाजान, दूरभाष : 9435038425**

# अमृत मंथन

✍ **अनिता निहालानी**
*पति - श्री एम. सी. निहालानी*
*अनुसंधान एवं विकास विभाग*

यह सारा ब्रह्मांड परम ऊर्जा से भरा कुम्भ है, सूर्य ज्योति कुम्भ है, नव ग्रह इस ऊर्जा को ग्रहण करने व वितरित करने हेतु बने कुम्भ है, धरा जीवन कुम्भ है और जीव प्रेम कुम्भ है। मानव देह के भीतर जिस घट-घट वासी परमात्मा का निवास है, वह स्वयं शांति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति, पवित्रता और ज्ञान का कुम्भ है। ये सभी जिस मूल तत्व से बने हैं वह अमृतत्व है, छल-छल छलकता अमृत इन सभी से पल-पल इस सृष्टि में प्रवाहित हो रहा है। इसी की याद दिलाने न जाने कितनी सदियों से पुण्य भूमि भारत में चार पावन तीर्थों पर आयोजित किया जाता है कुम्भ महोत्सव। गंगा के तट पर हरिद्वार, त्रिवेणी तट पर प्रयाग, गोदावरी तट पर नासिक तथा क्षिप्रा तट पर उज्जैन में समय-समय पर ग्रह-नक्षत्र की गणना के अनुसार कुम्भ का आयोजन होता है।

इलाहाबाद प्रयाग में होने वाला महाकुम्भ विश्वभर में अपनी विशालता और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है, जो बारह पूर्ण कुम्भों के बाद आता है, अर्थात पूरे एक सौ चवालीस वर्षों के बाद। पुराणों में कथा आती है, एक बार इंद्र द्वारा दुर्वासा ऋषि का अपमान करने पर उनके शाप के कारण देवता शक्तिहीन हो गए थे, असुर बलशाली होते जा रहे थे। देवताओं को विष्णु ने सुझाव दिया कि दानवों से मैत्री करके, मिलजुल कर वे दोनों सागर मंथन करें तो अमृत की प्राप्ति होगी, सागर मंथन में पहले हलाहल विष निकला जिसे शिव ने ग्रहण किया, जो कल्याणकारी हैं, सृष्टि के कण-कण में बसे हैं, जब अमृत कलश या कुम्भ मिला उसको प्राप्त करने के लिए पुन: देवों व असुरों में युद्ध होने लगा, पूरे बारह दिनों तक युद्ध चला, इस दौरान अमृत की कुछ बूँदें हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन में गिरीं, जहां हर बारह वर्ष के बाद पूर्ण कुम्भ का आयोजन होता है। इस अमृत का वितरण किया मोहिनी रूपधारी विष्णु ने, अपनी-अपनी रूचि के अनुसार दोनों को उनका प्राप्य मिला।

यह माना जाता है कि उच्च लोकों को जाने का द्वार इन दिनों में खुल जाता है, साधकों की जन्मों की साधना सफल होती है और अमरत्व की प्राप्ति होती है। कहते हैं कि इस मेले में ऐसे अनेक साधु-संत भी आते हैं जो वर्षों से हिमालय की गुफाओं में निवास करते हैं, ऐसे किसी दुर्लभ संत से मिलने की आशा में भी दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं। जन-जन का सैलाब उमड़ता है जिसमें भेद-भाव भुलाकर मानव समूह एकत्र होते हैं, देश-विदेश के इतने बड़े जन समुदाय का एक साथ एक लक्ष्य के लिए एकत्र होना अपनी मिसाल अपने आप है।

अमृत ही उर्जा का स्त्रोत है, जो जीवन व्यापार के लिए परम आवश्यक है। कड़ाके की ठंड में शीतल बालू पर निवास, अति शीतल जल में स्नान करने के लिए ऐसी है आध्यात्मिक ऊर्जा की आवश्यकता है। दु:ख, दुर्बलता, मनो-मालिन्य, किसी भी तरह का विक्षेप, इन सब को भुलाकर साधक कुम्भ का एक पर्व अपने भीतर भी मनाता है। भीतर ही देवता भी हैं और असुर भी। जब-जब सत्य का अपमान होता है, दैवीय गुण क्षीण हो जाते हैं, दुर्गुण प्रबल, तब संत जन कहते हैं आत्म मंथन करना चाहिए, जिससे आत्मा रूपी अमृत के कलश की प्राप्ति हो। आत्ममंथन से ही शक्ति प्राप्त होती है। इस उर्जा के कलश को पाकर भी यदि द्वंद्व समाप्त नहीं होता, अहंकार बढ़ जाता है, तब पुन: संत जन ही उस शक्ति के उपयोग का साधन बताते हैं। जिससे वास्तविक उत्सव का आयोजन होता है, सभी के जीवन में प्रसन्नता भर जाती है। जो दु:ख अभी आए नहीं हैं उन्हें भी दूर करने के लिए साधक पुण्य एकत्र करते हैं, तीर्थों में स्नान करते हैं। जिससे मन के पूर्वाग्रह टुटते हैं, सुख-सुविधा का एक जो आकर्षण मानव की जड़ बना देता है, उससे छुटकारा मिलता है, प्रसन्नता की एक अनोखी धारा मन-प्राण को आप्लावित कर देती है। मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा प्रभु के मंदिर तक ले जाने वाले इन चारों मार्गों पर चलना सुगम हो जाता है। सारा समाज जब एक ही उद्देश्य के लिए आया है तब मित्रता की एक अनदेखी डोर में सब बंध ही गए। विदेशी यात्री स्नेह की एक मशाल लिए ही भारत आते हैं और भारत वासी उसमें स्नेह चुकने नहीं देते। करुणा की तो धाराएँ ही बहती है, जहां दिन-रात अन्नदान, वस्त्र दान, ज्ञान दान चल रहा हो वहाँ कठोर हृदय भी पिघल जाते हैं। सम्पन्न ही नहीं विपन्न भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार तीर्थों में दान करते हैं। मुदिता तो हर एक के मुखड़े का आभूषण बन जाती है, अदृश्य सरस्वती की पावन धारा की तरह मानव मात्र की गहराई में जो आनंद कुम्भ छिपा है वह एसे आयोजनों में छलक ही जाता है। जो भी कमियां, अभाव या असुविधा होती है, जन उनकी उपेक्षा करना सीख जाते हैं। दृष्टि विशाल हो जाती है। मेले में ऐसे संतों का आगमन होता है जिनकी दृष्टि मात्र से भीतर के दोष जल जाते हैं, जो जीते जागते तीर्थ हैं, करुणा से भरे हैं। भारत की परम धरोहरों में से एक है यह कुंभ मेला इसकी गरिमा को बनाये रखना हर भारतीय का पुनीत कर्त्तव्य है। ❐

## नया भारत

✍ **दिगंत डेका**
*वरिष्ठ सहायक-I (हिंदी अनुवादक)*
*राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग, दुलियाजान*

जागो हे माँ जननी
पुकार रहा लाचार पुत्र यह तेरा,
उठाओ भाला चीर दो छाती
हो रही चारों ओर तेरी कैसी दुर्दशा।

हर तरफ बैचेनी लुट-मार
बहन-बेटी नहीं कोई मोल,
बेहाल कोर्ट-कचहरी, न्याय-व्यवस्था तक
सबमें बस पैसा भारी, न्याय की देवी भी गयी तौल।

राजनीति, शिक्षा, पत्रकारिता, स्वास्थ्य-सेवा-व्यवस्था
सबमें 'भ्रष्ट-आचरण' का ही बोलबाला है,
'जिसकी लाठी, उसकी भैंस'
इसी को लेकर जग में हो-हल्ला है।

बहाया था खून अपनो ने, फिर मिली थी आजादी
देखा स्वप्न स्वर्णिम भारत का,
तेरे ही सपूतों ने सींचा था धरती पर
भविष्य नयी पीढ़ी का।

बापू ने दिखाया था पथ अहिंसा का
मगर वह तो बनकर रह गयी गाथा किताबों की,
प्रतिस्पर्धा का युग आज पर किसी को सही इल्म नहीं
बस दिन-रात पैसा कमाने की होड़ में है जुते सभी।

प्रण लिया हमने जड़ से उखाड़ फेकना है
सींचा है मन में नैतिकता का पौधा,
हर दिल में जगानी है उम्मीद की किरण
गढ़ना है स्वप्नों का 'नया भारत' हमारा। ❒

## बेटी

✍ **सचिन गुप्ता**
*उप मुख्य अभियंता (आगार)*
*ऑयल इंडिया लिमिटेड (रा.प.) जोधपुर, राजस्थान*

आँगन की कली, अब होकर बड़ी,
बाबुल घर से जब जाने लगी।
नयनों से बही अश्रु की लड़ी,
बेटी मेरी अब कहाँ चली।

आँखे रोईं, हृदय चीखे,
बेटी के नयन भीगे भीगे।
सिसक रही बेटी प्यारी,
कैसी यह रीति गज़ब न्यारी।

दे रही दुआएँ, आँचल भीगा
बेटी तुझसा ना कोई दूजा।
मेरी बुलबुल, आँगन की खनक,
बेटी मेरी अब कहाँ चली।

कैसे जिउं? बेटी प्यारी,
तू ही हृदय जाँ हमारी।
आँगन की कली, होकर बड़ी,
बाबुल घर से तू जाने लगी। ❒

# झूठ की कीमत ( कहानी )

✍ **डॉ. उमाशंकर पाण्डेय**
*स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)*
*केंद्रीय विद्यालय ऑयल, दुलियाजान*

महेश फूट-फूट कर रोता जा रहा था और गुरुजी उसके सर पर हाथ फेर रहे थे और कह रहे थे कि जीवन क्षणभंगुर है पुत्र। इसलिए सबको प्यार देना सीखो। एक आश्रम में एक महात्मा जी रहते थे। उनकी वाणी में जादू था। एक बार जो उनसे मिल लेता उनका होकर रह जाता। विनम्र और शांत स्वभाव कभी भी क्रोध करते उनको किसी ने नहीं देखा था। उस आश्रम में उनके अनेक शिष्य रहते थे. सभी गुरुजी के प्रति श्रद्धावनत थे। उनके शिष्यों में एक शिष्य था जिसका नाम था महेश। वह गुरुजी के समक्ष बड़ी विनम्रता और सरलता से रहता था किन्तु जब शिष्यों से मिलता तो उसका स्वभाव बिलकुल बदल जाता था। वह किसी को कुछ नहीं समझता था। अहंकार और क्रोध उसमें कूट-कूट कर भरा था। पर कोई भी उसके बारे में गुरुजी से कुछ भी नहीं कहता था क्योंकि वह उनका प्रिय और चहेता शिष्य था। पर आग लगती थी तो धुआँ उठना स्वभाविक ही था। गुरुजी को भी इस बात की भनक लग गई थी पर वे सही अवसर की तलाश में थे क्योंकि समय पर दी गई सीख काफी कारगर होती है। एक दिन जीवन-मूल्यों की शिक्षा देने के बाद जब गुरुजी अपने विश्राम-कक्ष में विश्राम कर रहे थे तो महेश वहाँ पहुँचा और गुरु के चरणों में बैठकर कहा - गुरुजी! आपने इतनी विनम्रता और गंभीरता कैसे सीखी है? लोगों के अजीबों-गरीब प्रश्नों को सुनकर आपको कभी क्रोध नहीं आता? मैं भी ऐसे गुण सीखना चाहता हूँ। गुरुजी उसकी सारी बातें सुनकर कुछ देर शांत रहे और फिर बोले - अब तुम्हें इन सब चीजों की आवश्यकता ही नहीं होगी क्योंकि मैंने अपने तपोज्ञान के आधार पर तुम्हारा भविष्य जान लिया है। आज से ठीक सात दिन के बाद तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। यह सुनकर महेश चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगा. थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद गुरुजी फिर बोले - विधि के विधान को कोई बदल नहीं सकता, चाहे मैं होऊं या फिर कोई और। विधाता की इच्छा को स्वीकार करो और जाओ जीवन के शेष दिन अपने सगे - सम्बन्धियों के साथ प्रेम व्यवहार के साथ बिताओ। अब महेश जहाँ भी जाता, जिससे भी मिलता बड़े प्रेम से मिलता, बड़ी प्यार भरी बातें करता और जब उनसे विदा होता तो उनसे यह जरुर कहता कि ''भइया जाने-अनजाने में अगर मुझसे कोई भूल हुई हो तो हमें माफ़ कीजिएगा।'' उसका यह बदला हुआ रूप देखकर सभी लोग आश्चर्य चकित होते और उसकी भूरि-भूरि प्रसंशा करते। जब यह समाचार गुरुजी को मिली तो काफी खुश हुए। अंत में उसके जीवन का सातवाँ दिन भी आ गया वह बड़े शांत मन से गुरुजी के पास पहुँचा। उनके चरणों में बैठकर कहा - गुरुजी मुझे यह आशीष दीजिए कि इस लोक में नहीं उस लोक में पहुँचकर मैं उन सभी गुणों को सीख सकूँ जो यहाँ सम्भव न हो सके। गुरुजी ने शिष्य को बड़े गौर से देखा कि वह पश्चाताप की अग्नि में जलकर कैसे कुंदन हो रहा था। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हे आशीष देता हूँ कि तुम दीर्घायु हो, यशश्वी हो, तुम्हे वह सब मिले जिसकी तुम्हारे मन में चाहत हो। यह सुनकर महेश आश्चर्य चकित होकर गुरुजी की तरफ देख कर बोला - गुरुजी आज तक आपने कभी भी झूठ नहीं बोला आज जब मेरा अंत समय आ गया है तब आप मुझसे झूठ क्यों बोल रहे हैं? उन्होंने कहा - नहीं पुत्र आज मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, झूठ तो आज के सात दिन पहले बोला था। मेरा मानना है कि वह झूठ, झूठ नहीं होता जो किसी के जीवन की बुराइयों को अच्छाइयों में बदल दे बल्कि वह झूठ तो मेरी नज़र में सच से भी ज्यादा कीमती होता है। यह सुनकर महेश फूट-फूट कर रोता जा रहा था और गुरूजी उसके सर पर हाथ फेर रहे थे और कह रहे थे कि जीवन क्षणभंगुर है पुत्र! इसलिए सबको प्यार देना सीखो। ❒

# हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाए जाने की दिशा

हाल ही में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने अधिकारिक भाषाओं को लेकर बनी कमेटी की उस सिफारिश को मान लिया है जिसमें यह कहा गया था कि यदि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री समेत मंत्री और अधिकारी हिंदी बोल, पढ़, लिख व समझ सकते हैं तो उन्हें हिंदी में ही भाषण देना चाहिए। यह बात बहुत ही दुखद है कि इस समिति द्वारा ऐसी सिफारिशों को लागु करने में छह वर्ष का लंबा समय लग गया क्योंकि इस समिति द्वारा आज से छह साल पहले हिंदी भाषा को आमजन में लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न राज्यों और केंद्र से काफी विचार-विमर्श के बाद पूर्व में 117 सिफिरिशें की थी। देर से ही सही लेकिन हिंदी के लिए बनी समिति की सिफारिशों को स्वीकार करना अति सुखद इसलिए भी है कि हिंदी भारत की राजभाषा है। हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाए जाने की दिशा में यह कदम मील का पत्थर साबित होगा। आज भारत के करीब चौदह से पंद्रह राज्यों में हिंदी बोली, लिखी, पढ़ी, व समझी जाती है और हिंदी का महत्व भारत से लेकर यूएनओ व चीन जैसे देश में भी बढ़ रहा है जहां की मंदारिन को पीछे छोड़ते हुए हिंदी ने विश्व में अग्रणी स्थान को प्राप्त कर लिया है। आज चीन की जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है और वहां की राष्ट्रभाषा मंदारिन या चीनी है। देवनागरी हिंदी का चीनी मंदारिन को पछाड़ना दर्शाता है कि हिंदी निरंतर प्रगति के पथ तो आगे बढ़ ही रही है लेकिन अति दुखद यह है कि बावजूद इसके देवनागरी हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा होने का दर्जा अभी तक भी प्राप्त नहीं हुआ है। आज स्वयं भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी अपने ज्यादातर भाषण हिंदी में देकर भारत की लोकप्रियता को विश्व में बढ़ा रहे हैं, यह अत्यंत ही काबिले तारीफ है। अंग्रेजी भारत में लोकप्रिय जरूर है लेकिन इसको बोलने, पढ़ने, लिखने व समझने वाले लोगों की संख्या हिंदी के समक्ष नगण्य ही है लेकिन फिर भी हम हमारे बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाना, लिखाना ज्यादा उचित समझते हैं। अंग्रेजी लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति का आज भी हम लगातार अनुशरण करते चले जा रहे हैं और यह स्थिति तब है जब हिंदी विश्व में अपनी प्रभुता का परचम लहराने में लगी है। एक हिंदी राष्ट्र में स्वयं हम हिंदी के पतन के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि आज एक सौइ इक्कीस करोड़ से अधिक आबादी वाले देश भारत में करीब-करीब जनसंख्या ज्यादा नहीं तो टुटी फूटी हिंदी तो बोल और समझ लेती ही है। यहां तक कि दक्षिण भारत के लोग भी जो कभी हिंदी का तगड़ा विरोध करते थे और समझते नहीं थे, वे भी आज हिंदी का तहेदिल से स्वागत करने लगे हैं और उन्हें अच्छी हिंदी आती है। हिंदी को लोकप्रिय बनाने में हिंदी सिनेमा का एक बड़ा व महत्वपूर्ण योगदान रहा है और वर्तमान में भी है। हिंदी प्रिंट मीडिया का योगदान भी हिंदी को पल्लवित पोषित करने में खूब रहा है और आज देश के अनेक गांवों और शहरों से हिंदी के अनेक छोटे बड़े अखबार निकलते हैं। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई है तो इसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं क्योंकि हम भाषा को प्यार तो करते है लेकिन कथनी को करनी में नहीं ढालते। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने एक बार यह बात कही थी कि कोई भी देश अपनी राष्ट्रभाषा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। भाषा किसी भी देश को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक राजनैतिक रूप से तो जोड़ती ही है साथ ही साथ देश की एकता और अखंडता को भी बनाए रखती है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है लेकिन अत्यंत दुखद है कि आज अंग्रेजी न जानने वाले को हीन दृष्टि से देखा जाता है। हिंदी, संस्कृत से निकली एक जोरदार भाषा है। संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है और यह बहुत ही वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी सरल, सहज भाषा है जिसने अनेक भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करते हुए खुद को सशक्त किया है। कोई भी भाषा वास्तव में सशक्त तब की जा सकती है जब उसके शब्दकोश को व्यापक बनाया जाए और शब्दकोश को व्यापक तभी बनाया जा सकता है जब उसमें अन्य भाषाओं से शब्दों को समाहित किया जाए। आज अंग्रेजी के विश्व स्तर पर फैलने का एकमात्र कारण उसके शब्दकोश का व्यापक होना है। अंग्रेजी ने विश्व की सभी भाषाओं से शब्दों को अपने शब्दकोश में समाहित किया है और आज उसका शब्दकोश बहुत ही बड़ा व व्यापक है। ताज्जुब की बात है कि अंग्रेजी ने सैकड़ों हिंदी शब्दों को अपने शब्दकोश में डाल दिया है। यह भी ताज्जुब की बात है कि हिंदी शब्द भी स्वयं हिंदी का नहीं है। यह फारसी भाषा का शब्द है। हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमारा सीधा सरोकार हिंदी से होना चाहिए लेकिन जैसे-जैसे हम शिक्षा ग्रहण करते चले जाते हैं वैसे-वैसे अंग्रेजी में बोलना, पढ़ना, लिखना व समझना हम अपनी शान समझते हैं। हिंदी में अपनी अभिव्यक्ति देने वाले हमें तुच्छ लगने लगते हैं। हमारे अफसर फाइलों पर टिप्पणी अंग्रेजी में ही करने में अपनी शान समझते हैं। लेकिन मेरे विचार से हमारे देश में दो या तीन प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी बोलते, पढ़ते, लिखते व समझते हैं। शेष, ज्यादातर अपनी अभिव्यक्ति हिंदी में ही देते हैं। सच तो यह है कि अंग्रेजी को लेकर हम दिखावा अधिक करते हैं और हम लार्ड मैकले के क्लर्क ही बना रहना चाहते हैं। भारत में कभी तक्षशिला व नालंदा

विश्वविद्यालय थे जिनकी शिक्षा में अनूठी पहचान थी और उनमें हिंदी पर काफी जोर दिया जाता था लेकिन आज अंग्रेजी विश्वविद्यालयों, स्कूलों का जोर है। हिंदी के शिक्षण संस्थान देश में कम नहीं है लेकिन हम हमारे बच्चों के एडमिशन अंग्रेजी स्कूलों में करवाकर उन्हें डॉक्टर, इंजीनियर बनाना चाहते हैं। हिंदी के प्रति हमारा लगाव होते हुए भी कम ही है क्योंकि हम समझते हैं कि आज जमाना अंग्रेजी का ही है और यदि बच्चे अंग्रेजी नहीं पढ़ेगे तो वे पिछड़ जाएंगे जबकि ऐसा नहीं है। हिंदी वैज्ञानिक भी है सरल भी है, सहज भी है, अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। हिंदी का वर्चस्व आज विदेशों में भी बढ़ रहा है। विदेशी हिंदी की महत्व को स्वीकार करने लगे हैं। साहित्य की भरमार हिंदी में है। कमी बस हमारी है कि हम हिंदी में अभिव्यक्ति को तुच्छ मानने लगे हैं। हमें भाषा से लगाव बनाना होगा। हिंदी रचनात्मकता को जन्म देने वाली भाषा है। हिंदी कमजोर नहीं बहुत सशक्त है, उसकी अपनी शब्दावली है, व्याकरण है, साहित्य है। हिंदी में तकनीक है तर्क है। हमें अपनी भाषा से प्यार करना होगा और अंग्रेजी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। हिंदी का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, हिंदी में अनेक संभावनाएं हैं। अंग्रेजों ने हमें पहले गुलाम बनाया। बाद में भाषा के नाम पर गुलाम बना दिया। आज हम भाषायी रूप से गुलामी को झेल रहे है। इंग्लैण्ड भारत की तुलना में एक छोटा-सा राष्ट्र है लेकिन आज उसकी भाषा अंग्रेजी पूरे विश्व की लिंक लैंगग्वज है। वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा है, कोर्ट की भाषा है, काफी हाऊजेज व सैलून्स की भाषा है लेकिन हम इतना बड़ा राष्ट्र होते हुए भी भाषा की दृष्टि से कमजोर ही नजर आते हैं। आजादी के कई दशक बीत जाने के बावजूद हिंदी उभरी है लेकिन राजभाषा से राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी। हमें सोचना होगा, चिंतन करना होगा। अभी हमें जागना ही होगा। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए काम करना होगा। कथनी को करनी में ढालना होगा। अन्य भाषाओं को सीखना उनका ज्ञान होना बुरा नहीं है। आदमी को ज्यादा से ज्यादा भाषाएं सीखनी व सिखानी चाहिए लेकिन निज भाषा को छोड़कर नहीं क्योंकि किसी ने क्या खूब कहा है निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल। ❐

✍ **धार्विक नमन, डिब्रूगढ़**
*साभार: पूर्वांचल प्रहरी*

## बेटी

✍ **वैशाली ग्वाला**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'डी'*

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी। ❐

## पढ़ाई का महत्व

✍ **अजली देवथरीया**
*कक्षा – दशवीं 'स'*

पढ़ाई है एक ऐसा ज्ञान
जिसे पढ़ते हैं हम सुबह-शाम।
पढ़ाई को जो जोड़े
शिक्षा से नाता को तोड़े।
जो पढ़ाई न करे
भाग्य को अपने फोड़े
अगर हम न ले शिक्षा
तो माँगे हम भिक्षा।
अगर पढ़ाई नहीं करोगे
तो जीवन में कभी सफल न होगें।
जो रहेगा अनपढ़-गंवार
जीवन में वे पछताएँ बार-बार।
अगर तुम न करोगे पढ़ाई
तो तुम खाओगे पिटाई
अगर पढ़ाई तुम करोगे
तो जीवन मे आगे बढ़ोगे। ❐



**दक्षिण की हिंदी विरोधी नीति वास्तव में दक्षिण की नहीं, बल्कि कुछ अंग्रेजी भक्तों की नीति है।** – *के. सी. सारंगमठ*

# परछाईं

✍ **डॉ. उमाशंकर पाण्डेय**
*स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)*
*केंद्रीय विद्यालय ऑयल, दुलियाजान*

जब से तू मेरे घर आई
जीवन में गूंजी शहनाई
जितने हैं अपने बन्धु-भाई
थकते न, करते तेरी बड़ाई
मन-मन्दिर की ऐसी मूरत है
देवी-सी तेरी सूरत है
जब भी मैं तुझसे मिलता हूँ
सच में प्रसून-सा खिलता हूँ
पिता के जीवन-रण की रणतरी है तू
माँ की सच्ची सहचरी है तू
बीमार पिता की दवा है तू
गर्मी में शीतल हवा है तू
रसोई का ताजा खाना है
कुल अखिल तेरा दीवाना है
हर समस्या का ही हल है तू
कुटुम्बी सुकर्मों का फल है तू
दीवाली की फुलझड़ी है तू
संग अपनों के सदा खड़ी है तू
सबके कदम चली है तू
भईया कहता है भली है तू
होली की रंगीन गुलाल है तू
ओलिम्पिक की असली मशाल है तू
हर घड़ी बावली है तेरी
तू कल्पना चावला है मेरी
जीवन की अमिट कहानी है
तू झांसी वाली रानी है
तेरी अनगिनत कहानियां हैं
तू मेरी मिर्जा सानिया है
जीवन में न कभी मलाल है तू
मेरी सानिया नेहवाल है तू
संतानों में अनूप है तू
संगीत में लता का रूप है तू
पापा के जीवन की ख्वाब है तू
जूही की कली, गुलाब है तू
पुण्य हवन की अग्यारी है
घर में केसर की क्यारी है
घर को तू स्वर्ग बनाती है
इसलिए सभी को भाती है
जब इस घर से तू जाएगी
सबको तू बहुत रूलाएगी
बिन तेरे, घर का ख्याल जब आता है
रक्तचाप बढ़ जाता है
जब तेरी याद सताएगी
अखियाँ नदियाँ बन जाएगी
मन कोसेगा सदा विधाता को
रोते क्यों हो, तुम दाता हो
जग-जीवन में जिसे सम्मान दिया
उसे बेटी का वरदान दिया
बेटी जिस घर में होती है
बुझती न उस घर की ज्योति है
हर पिता का एहसास वह
जीवन में कभी न निराश है वह
घर से लेकर परद्वारे तक
गलियों से ले चौबारे तक
केवल उसकी खुशबू होती है
पापा के संग हँसती है,
मम्मी के संग रोती है
माँगू ईश्वर से वरदान यही
वह पूर्ण करे अरमान यही
गर अगले जनम की बधाई दे
लाडली बेटी की परछाईं दे। ❑

# हिंदी के नए अंदाज

हिंदी 'एकवचन' नहीं, 'बहुवचन' है। हम हिंदि में नहीं हिंदीयों में रहते हैं। कहीं अवधी के टच वाली कहीं भोजपुरी के स्टाइल वाली, कहीं पहाड़ी विनम्रता लिए तो कहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेशवाली खड़ी कड़क, कहीं ब्रज का टच लिए मीठी मीठी तो कहीं पंजाबी टच वाली हिंदी, कहीं तमिलिंदी तो कहीं मलयालिंदी, कहीं मराठींदी तो कहीं गुजरिंदी, कहीं राजस्थानी हिंदी तो कहीं मालवोंदी, कहीं बुंदेलखंडी हिंदी तो कहीं हिंदी विभागों को परिनिष्ठित हिंदी, कहीं हिंदी अखबारों की हिंगलिश-विंगलिश तो कहीं अंग्रेजी अखबारों में रोमनी हिंदी कहीं हिंदी अखबारों में अंग्रेजी के साथ डांस करती हिंदी, कहीं विज्ञापनों की दनदनाती मिक्स हिंदी, कहीं एफएमों की सर्राटे-फर्राटेदार हिंग्रेजी, कहीं मोबाइल की मेसेजिंग वाली शार्टकट वाली रोमनी नागरी हिंग्रेजी, कहीं कहीं फेसबुक वाली हिंदी, कहीं ट्विटर वाली हिंदी, कहीं हिंदी अखबारों को हिंदी-हिंग्रेजी कहीं आरजे सिमरन की हिंदी तो कहीं आरजे गिन्नी की हिंदी, कहीं आदी की हिंदी तो कहीं खुरकी की हिंदी, कहीं राजदीप की हिंदी तो कहीं भूपेंद्र चौबे की हिंदी कहीं बरखा की हिंदी तो कहीं अर्णब की हिंदी, कहीं दिबांग की हिंदी तो कहीं रामदेव की हिंदी, कहीं लिटफेस्टों की हिंग्रेजी तो कहीं जावेद अख्तर की हिंदी, कहीं 'बाअदब बामुलाहिजा' करती हिंदी तो कहीं प्रणाम को 'पिरनाम' कहती हुई हिंदी, कहीं नमस्कार को नमस्कारम करने वाली संस्कृतीकृत हिंदी तो कहीं कहीं मेट्रो वालो हिंदी हाय हलो वाली हिंदी कहीं 'अगला स्टेशन मयूर विहार एक है दरवाजे बाईं और खुलेंगे, सावधानी से उतरें' मेट्रो रेल वाली हिंदी। कहीं 'सावधनी हटी और दुर्घटना घटी' वाली हिंदी, कहीं डीटीसी के कंडक्टरों ड्राइवरों की कड़क हरियाणी हिंदी, कहीं जो नमस्कार दे सकता है वो मुष्टि प्रहार नहीं वाली पुलिसिया हिंदी, कहीं बाबा रामदेव के विज्ञापनों की हिंदी कि 'अपने बालों से कहो जुग जुग जियो', कहीं 'लड़की ब्यूटी फुल्ल कर गई चल्ल' वाली 'बादशाह' के गानों की हिंदी, कहीं 'ठंडा मतलब कोकाकोला' की हिंदी, कहीं दुकानों पर लिखी 'टू के बदले फोर' सेल वाली हिंदी, कहीं नुक्ता हटाकर उर्दू को अपने में समो लेने वाली हिंदी, कहीं एफएम गोल्ड की हिंदी तो कहीं बिग एफएम की हिंदी तो कहीं रेडमिरची की हिंदी। कहीं जीटीवी के सीरियलों की हिंदी तो कहीं स्टारप्लस की हिंदी, तो कहीं डीजे वीजे आरजे वाली की हिंदी, कहीं संसदीय हिंदी कहीं असंसदीय हिंदी। कहीं केजरवाली हिंदी तो कहीं ममता बनर्जी की बंगींदी तो कहीं बहन मायावती की हिंदी, कहीं मोदी की हिंदी तो कहीं वैंकैयानायडू की हिंदी कहीं सोनिया की हिंदी तो कहीं राहुल की हिंदी, कहीं चिदंबरम की 'खोदा पहाड़ निकली चुइया' वाली हिंदी, कहीं रणदीप सुरजेवाला की साफ सुथरी ठहरी हुई हिंदी, कहीं मुलायम की ब्रजिंदी कहीं अखिलेश की लखनवी हिंदी, कहीं साहित्यकारों की हिंदी, कहीं रिक्शे वालों की हिंदी, कहीं ढाबे वालों की हिंदी तो कहीं चाय वालों की हिंदी, कहीं टीवी चैनलों में चर्चाकारों की हिंदी, कहीं वकीलों की हिंदी, कहीं डाक्टरों की हिंदी तो कही केमिस्टों की हिंदी, कहीं बैकों की हिंदी तो कहीं ट्रैफिक पुलिस की हिंदी, कहीं मोबाइलों में चैट करती हिंदी, कहीं इंटरनेट पर लिखी बोली जाती हिंदी, कहीं ग्रामीणों की हिंदी, कहीं बैकों की लाइन में लगे लोगों की हिंदी, कहीं एटीएम से आगे लगे लोगों की हिंदी, कहीं चैनलों के रिपोर्टरों की हिंदी। आप गिनाते जाइए और महसूस करते जाइए कि एक ही वक्त में आप हजार तरह की हिंदियों से दो चार होते हैं। एक हिंदी होती तो वह खांचे में फिक्स्ड होती। उसका व्याकरण बनता। वह उसकी जकड़बंदी करता और वह उसके अंदर बंधकर कब की मर चुकी होती। लेकिन हिंदी बनी ही व्याकरण को फेल करके। वह व्याकरण से बंधकर कभी नहीं चली। जब जब किसी ने व्याकरण बनाया तब तब उसने उससे इनकार किया। अनुशासन के बाहर बनती हुई वह चलती रही, बनती रही, बदलती रही और व्यकरण उसके लिए एक सिर्फ एक आइडिया की तरह बना अधबना रहा आया। यों हिंदी में एक व्याकरण सा कुछ है लेकिन वह एकदम न्यूनतम है जो सीबीएसई की छठी कक्षा से आठवी दसवीं कक्षा तक की किताबों में पढ़ाया जाता रहता है। उसी के आधार पर विद्यार्थियों को नंबर मिला करते है मगर हिंदी बोलने बरतने वाले उससे बंधकर नहीं रहते। हिंदी बोलने और सुनने से सीखी जाती है, किसी 'अष्टाध्यायी' या 'लघुसिद्धांत कौमुदी' से नहीं सीखी जाती। हिंदी एक विराट व्यवहार है। जो भाषाएं व्याकरण के खूंटे से बंधी रही, जो शुद्धतावाद की कायल रहीं, वे मारी गई और क्लासिक बनी रह गई, लेकिन हिंदी मिलावट और अशुद्धता की कायल रही और वह जिंदा रह गई। उसका असुद्ध रहना ही उसकी सुद्धता है। उसका स्टैंडर्ड है। उसका मानक है। उसकी इम्युनिटी है। उसकी अमरता है। वह एक ही वक्त में भाषा और बोली दोनों है। आज की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली इस भाषा का अपना नया शोर है। जितना शोर है उतना ही उसका जोर है। इसीलिए वह हर कहीं 'वंस मोर' है। बहुत सी भाषाओं की यात्रा जनता से शास्त्र तक यानी व्याकरण तक हुई है और वे शुद्धतावाद के खुंटे से बंधे हुए ही मर गई हैं। हिंदी अकेली ऐसी भाषा है जो व्याकरण की जगह अपनी जनता के खूंटे से बंधी है और

एक न्यूनतम कामचलाऊ व्याकरण से उसका काम चल जाता है, उसके बाद वह आजाद हो जाती है और इस तरह दुनिया के वैयाकरणों को चकित करती रहती है। अपने 'हाइपर रीयल' (अत्यंत चंचल) स्वभाव में वह अनिर्वचनीय और अपरिभाषेय सी बन चली है। वह 'बियोंड ग्रमर' है। जब तक वह ठहरती नहीं तब तक पकड़ में आती नहीं। और मिजाज से वह स्वयं भी लक्ष्मी जी की तरह ही 'चंचला' है। इसीलिए सब उसे चाहते हैं। यही उसका 'चंचलित स्वभाव' (हाइपररीयल नेचर) है कि वह न 'एकमुखी' है, और न 'एक कानवाली' है। वह अनंतमुखी अनंत कानवाली, विविध, 'जनक्षेत्रा' (पब्लिक स्फीयर्स) वाली है। इन 'हिंदियों' या इनसे मिलकर बनने बाली इस 'हिंदी' को कोई एक दो लेखक या पंडित नहीं बना रहे बल्कि उसे ये चार बड़े तत्व बना और बदल रहे हैं मीडिया मनोरंजन उद्योग और राजनीति और हिंदी शिक्षण संस्थान। पहले दोनों तत्व एक दूसरे में मिले हुए हैं। इनके अंतर्गत प्रिंट, रेडियो, टीवी, फिल्में, सोशल मीडिया, मोबाइल, मार्केट, विज्ञापन, कंज्यूमरिज्म, म्यूजिक इंडस्ट्री और तमाम तरह की पापुलर कल्चर इंडस्ट्री आदि बहुत सी चीजें शामिल हैं। इनके पीछे बहुत बड़ी पूंजी का बल सक्रिय है। इनके साथ चौबीस बाई सात की राजनीति भी हिंदी को बनाने में बड़ा रोल अदा करती है क्योंकि हिंदी जनता सबसे बड़ी वोट बैंक है। इनके अलावा स्कूल से लेकर विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग, राष्ट्रभाषा अधिनियम के तहत कार्यरत हिंदी अधिकारी और हिंदी संस्थान आदि भी एक तरह की हिंदी बनाते रहते हैं। इनमें से किसकी हिंदी गलत है, किसकी सही है या कि कौन सी गलत और कौन सी सही है ? ऐसे सवाल एकदम बेतुके हैं। एक मानी में सभी हिंदियां करेक्ट हिंदियां हैं। इन सबसे मिलकर एक बड़ी हिंदी भी बनती है जो अखबारों में चैनलों में रेडियो में लिखी कही सुनी जाती है जो किताबों में लिखी आती है, जो बाजार से लेकर घरों तक में बोली बरती जाती है। अगर वह कम्युनिकेट कर रही है या उसके जरिए अधिकतम लोग कम्युनिकेट कर रहे हैं तो समझिए वह एक सही हिंदी है और जो ज्यादा से ज्यादा लोगों को कम्युनिकेट कर सके वही असली है। बिना मान्य व्याकरण के भी वही व्याकरणसम्मत है क्योंकि हर भाषा 'अधिकतम कम्युनिकेशन' के निहित व्याकरण से काम करती है जो हर भाषा में होता है। उसे अलग से बनाएं न बनाएं, भाषा की संप्रेषण क्षमता ही उसका असली व्याकरण होती है। इसी प्रक्रिया में वह अपना स्तरीकरण भी करती चलती है। ऐसा स्तरीकरण संभव भी है। उदाहरण के लिए हिंदी के अनेक विद्यार्थी भी 'विद्यार्थी' या 'विद्यालय' शब्द को 'विधर्थी' या 'विधलय' लिखते हैं, कई 'हैं' की जगह 'है' या 'हें' लिखकर या तो एक मात्रा खा जाते हैं या आनुनासिक या अनुस्वार की नासिका ही तोड़ देते हैं। कई भोजपुरी के प्रभाव के कारण वाक्य में कर्ताकारक 'ने' को ही खा जाते हैं कई फिल्मों में मराठी प्रभाव के कारण 'मैं मेरे घर गया' कह लिखकर ठेठ हिंदी के 'मैं अपने घर गया' को भूल जाते हैं। कई 'एवं' 'और' 'तथा' में फर्क नहीं कर पाते, कई 'किंतु' को 'किंतू' लिखते हैं और 'परंतु' को 'प्रंतु' या 'परंतू' बोलते लिखते हैं। 'नहीं' कही कहीं 'नहि' या नहिं बना दिया जाता है और बेचारी 'कि' को 'की' बना दिया जाता है। हस्तलिखित उत्तर पुस्तिकाओं में हिंदी में वर्तनी संबंधी गड़बड़ियों के ऐसे अनेक उदाहरण खोजे जा सकते हैं। इसी तरह वाक्य में पूर्ण विराम कहां लगे, कहां अल्पविराम लगे, कहां अर्द्धविराम लगे, कहां कोलन लगे, कहां डैश लगे कहां ऑब्लीक लगे कहां विस्मयादिबोधक चिह्न लगे इनमें बहुत भ्रम है। वाक्य में 'हैशटैग' लगे या 'एट द रेट' बताते वाला निशान लगे, कि न लगे, इसकी कोई मान्य व्यवस्था नहीं है जबकि ये प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे अनेक उदाहरण खोजे जा सकते हैं और इनको कुशलता से हतोत्साहित किया जा सकता है। यह काम हिंदी के प्रायमरी से लेकर एमए तक के हिंदी मास्टरों का है, प्रिंट के कापी एडिटरों और इलेक्ट्रनिक मीडिया में कापी लिखने वालों का है कि वे इन मामूली चूकों पर ध्यान दें। भाषा के स्तरीकरण का पहला चरण भाषा का संपादन होता है। अगर बचपन में ही ठीक करने की आदत पड़ जाए तो लिखित हिंदी में ऐसी गलतियां कम हों और हिंदी का न्यूनतम मानकीकरण भी हो जाए। लेकिन हिंदी करे तो क्या करे उसके नित्य बढ़ते बदलते विराट जनक्षेत्रा में वर्तनी और उच्चारण की गड़बड़ियां चलती रहनी हैं। जब हर दिन नए-नए इलाकों से हिंदी बोलने बरतने वाले आएंगे तब बोलने बरतने के बीच इसी तरह की गलतियां चलती रहेंगी। लेकिन ये गलतियां भाषा के विकास की निशानी ही हैं। इन्हीं के चलते इतनी तरह की 'हिंदियां' संभव हो रही हैं। हिंदी 'अधिकतम संप्रेषण' के काम में लगी है। वह 'न्यूनतम व्याकरण' से 'अधिकतम संप्रेषण' करते हुए 'अधिकतम शब्दकोश' बना रही है। रोजाना के काम काज में आने वाले अनेक अंग्रेजी शब्द हिंदी में जुड़ते जा रहे हैं कैशलेस, लैसकैश, डिजिटल, आन लाइन, एटीएम, पेटीएम, मोबीक्विक डिमोनिटाइजेशन, आरबीआई, जनधन अकांउट, बैंलेंस, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअपइंडिया, टुजी, थ्रीजी, एसबीआई, न्यू नार्मल जैसे शब्द तो पिछले एक महीने में हिंदी में घुस गए हैं। बहरहाल, हिंदी का एजंडा संवाद, संचार और संप्रेषण ही है, उसका एक प्रकार का अनिश्चित मानकीकरण भी होता जा रहा है। कई लोग मानते हैं कि वह उच्चतर शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई है न उस तरह से ज्ञान सक्षम ही हो पाई जिस तरह का ज्ञान पश्चिम बनाता रहता है। कहने की जरुरत नहीं कि अंग्रेजी दिमाग और अंग्रेजी मीडिया इसी तरह से सोचते हैं। ऐसे देशी अंग्रेजों की इस प्रकार की समझ शुद्ध 'उत्तर औपनिवेशिक' (पोस्ट कॉलोनियल) समझ है। जरा सोचिए जमीनी

राजनीति की भाषा हिंदी है। राजनीति उसी में दिनरात रमती है। अंग्रेजी पत्रकारों तक को हिंदी सीख चुनावी विश्लेषण करने होते हैं। हिंदी राजनीतिग ? ती है तब जाकर विशेषज्ञ राजनीतिक सिद्धांतों को गढ़ पाते हैं। राजनीति बनाए हिंदी और गढ़ें अंग्रेजी वाले। जब कभी देसी अंग्रेज हिंदी समाज को समझने में अटक जाते हैं हिंदी से ही काम चलाते हैं। और इन दिनों तो हालात ये है कि अंग्रेजी के जाने माने पत्रकार तक हिंदी अखबारों में अनुदित होकर और छपकर ही अपने को धन्य समझते हैं। अगर हिंदी आपकी अंग्रेजी के 'स्तरीय ज्ञान निर्माण' में इतनी ही 'अक्षम' है तो हिंदी पाठक आपको समझेगा कैसे सर जी! काहे हिंदी में आने को ललचते रहते हैं! कृपा कर हिंदी को उसके हाल में मस्त रहने दीजिए। आपके बिना भी वह जिंदा है और अपनी कथित 'अक्षमता' में भी आपको ललचाने की 'क्षमता' रखती है! यकीन करें जनाब कि एक दिन यह सब भी हिंदी में होने लगेगा। तब आपकी ये अंग्रेजी दुकान बंद हो जाएगी! कुछ हिंदी वाले भी ऐसा मानते हैं कि हिंदी में ज्ञान की सामग्री नहीं बनती! यह कुछ हिंदी विद्वानों की अपनी ही अक्षमता का स्वीकार है। उनको हार्वर्ड आक्सफोर्ड का तैयार माल ऐसे में मेक इन हिंदी करने की क्या जरूरत है ? खुद हिंदी में बनाते नहीं और कहते हैं कि हिंदी में बनता नहीं। आप बनाओगे तो बनेगा! इसमें हिंदी का क्या दोष ? दोष है तो हम सब का! ऐसी ही निराली है हमारी हिंदी यानी हिंदियां! ❐

✍ **सुधीश पचौरी**
*साभार: सेंटिनल*

# प्यार

✍ **अनिषा कुमारी**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'डी'*

प्यार तो होता है सबसे अनमोल
इसका हमारी जिन्दगी में बहुत महत्व
प्यार में न जाने लोग क्या-क्या कर बैठते हैं
प्यार सब को नसीब नहीं होता
प्यार हमें जन्म से लेकर मृत्यु तक
एक मात्र सहारा भी होता है
प्यार जिसके बिना हम जी नहीं सकते
न जाने इससे हमारी कौन सी कड़ी जुड़ी हुई है
प्यार से ही सबका उज्जागर भी होता है
प्यार से ही सबका अंत होता है
हमारी जिन्दगी में बहुत सारे लोग खुशियाँ लेके
आते हैं और बहुत सारे लोग खुशियाँ दे जाते हैं
हमें सबसे पहला प्यार माँ और पिता का मिलता है।
अगर यही लोग न हो तो हमें इनके जैसे प्यार कोई दे ही नहीं सकता।
प्यार के लीए लोग जान देने के लिए राजी
रहते हैं, और कुछ लोगों को प्यार को प्यार ही नसीब नहीं होता
हमें बहुत सारे ऐसे लोगों का प्यार मिल जाता है
जीसे हम चाह के भी भूल नहीं सकते
इसी से लोग जीवन में खुशियाँ ले आते हैं
और कुछ लोगों को प्यार ही नसीब नहीं होता ❐

# माँ का रिश्ता

✍ **पंकज कुमार यादव**
*कक्षा – सातवीं 'डी'*

माँ का रिश्ता सबसे प्यारा, सबसे न्यारा,
कहती रहती हरदम मुझको,
तू ही है मेरा दुलारा, आँख का तारा।

छोटी-छोटी बात हमें सिखाती,
अपना दुख वह कभी न बताती।
भोरे-भोरे सबसे पहले माँ जगती,
बर्तन – माँज, साफ़ घर – आगँन
जगा हमें पढ़ने को कहती।

कभी सुनाती राम, सुंदर जनो की कहानी,
कभी सुनाती कृष्ण, कर्ण का दान जुबानी।
कभी डाँटती, कभी दुलारती,
घर में सबका ध्यान है रखती।

ऐसा है माँ का रिश्ता
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा। ❐

# महत्व इंसान के अर्थ का

✍ **शाहिदा खातून**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'ब'*

भगवान हर वक्त सब के साथ न रह सकते
इसलिए उन्होंने माता-पिता बनाया
माता-पिता स्कूल में साथ नहीं जा सकते
इसलिए ईश्वर ने शिक्षक बनाया
शिक्षक हमें हर वक्त मार्ग दर्शित नहीं कर सकते
इसलिए उन्होंने किताबों को हाथों में पकड़ाया।
किताबें हर वक्त साथ नहीं रहती है,
इसलिए मनुष्य का मस्तिष्क विकसित होता आया।
पीढ़ी दर पीढ़ी चलते-चलते
मनुष्य ने टेकनोलॉजी बनाया
टेकनोलॉजी इतनी बढ़ती गई कि
इसने मनुष्य को अंतरिक्ष तक पहुँचाया।
मनुष्य ने जब चूम लिया आकाश तो
उसने घमंड को आगे बढ़ाया।
उसके इतने करने भर से ही
मनुष्य का दिमाग खोखला होता आया
और फिर दु:खी जीवन के धुँधलेपन में
कुछ मनुष्यों ने अंधविश्वास का गर्जन फैलाया।
और खुशियों के तलाश में उसने
गिरिजाघर, मंदिर, मसजिद बनाया।
यह सब तो ठीक ही था पर
मनुष्य ने मनुष्य का गला भी दबाया।
फिर इस मनुष्य रूपी, विशाल का दानव ने,
अपना ही मान घटाया।
कौन?
कौन? हटाएगा इस प्रश्न चिह्न को
कि मानव का अर्थ समझा जाए।
हाँ यह उच्च विचारों को ही करना होगा।
उसे ही मानवता के घावों को भरना होगा।
फिर...
निर्माण होगा एक नई सृष्टि का
जहाँ मनुष्य के पैर धरती पर होंगे। ❒

# जिंदगी

✍ **शिल्पा कुमारी**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'डी'*

जिदंगी बहुत सुन्दर है
जिंदगी बहुत सुहाना है
जिंदगी किस्मत वालों को मिलती हैं
जिंदगी को गवाओं मत
जिंदगी बहुत प्यारी है
रब ने दिया है यह जिंदगी
जीने के लिया
मरने के लिया नहीं
जिंदगी में खुलके हंसो
जिंदगी है खुलके जीयो
जिंदगी हमारा है
रब ने दिया है ये जिंदगी
देखो तो कितना सुहाना है जिंदगी
जिसके पास जीने का तरीका नहीं
उसके पास जिंदगी नहीं
जिंदगी बहुत कीमती है
जिंदगी का महत्व समझो
रब ने दी है ये
जिंदगी जीने के लिए
मरने के लिए नहीं
कुछ करने के लिए। ❒

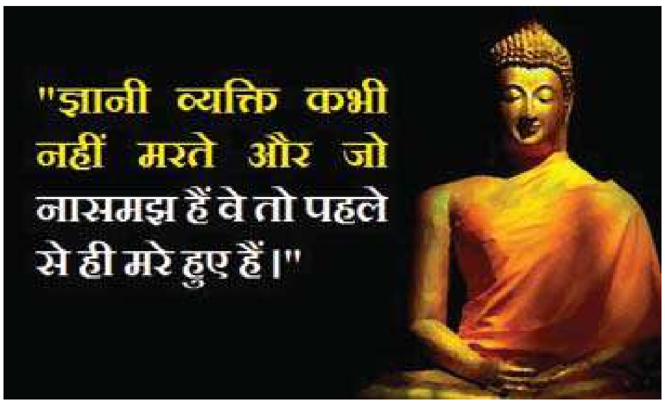



समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है। –*सर जार्ज ग्रियर्सन*

# तोड़ती नहीं जोड़ती है हिंदी

प्रकृति सदा से है। संस्कृति मनुष्य का सचेत सृजन कर्म है। सृजन कर्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है भाषा। भाषा संवाद का माध्यम बनी और प्रीतिपूर्ण समाज का विकास हुआ। भारत बहुभाषिक राष्ट्र है, लेकिन बहुभाषिकता सांस्कृतिक एकता में बाधक नहीं रही। अमेरिकी विद्वान एमेन्यू ने भारत को एक भाषी क्षेत्र स्वीकार किया है। सुब्रमण्यम भारतीय प्रख्यात तमिल कवि थे। उनकी जन्मशताब्दी (1982) पर भारती की चुनिंदा रचनाओं का हिंदी अनुवाद छपा था। एक कविता में भारत माता की उपासना है बोले 18 भाषाएं वह/किंतु एक चिंतन एक ध्यान है। भारती ने अंग्रेजी की आलोचना की थी। भारत एक सांस्कृतिक इकाई है। हिंदी, संस्कृत, कन्नड़ या तमिल आदि भाषाएं एक ही राष्ट्रभाव को प्रकट करने का माध्यम हैं। संविधान सभा में तमिलनाडु और कर्नाटक के भी सदस्य थे। अधिकांश सदस्य हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के समर्थक थे। बावजूद इसके तामिलनाडु व कर्नाटक के कुछ दल व संगठन केंद्र सरकार पर हिंदी थोपने का घटिया आरोप लगा रहे हैं। कर्नाटक के कर्नाटक राक्षणा वेदिके, राज ठाकरे की मनसे, तमिलनाडु की डीएमके सहित ओडिशा व केरल के कुछ संगठनों ने बेंगलुरु में बैठक की है और हिंदी प्रसार को क्षेत्रीय संस्कृतियां नष्ट करने का अभियान बताया है। कर्नाटक विकास की दौड़ में प्रगति पर है ही, तमिलनाडु भी विकास कर रहा है। आईटी के क्षेत्र में बेंगलुरु का नाम चर्चित है। यह हिंदी भाषी नौजवानों से भरापुरा है। बेंगलुरु में मेट्रो स्टेशनों पर हिंदी में लिखे नामपट्टों को हिंदी थोपने की साजिश बताया जा रहा है। नीट, सीबीएसई और जीएसटी आदि के बहाने केंद्र पर राज्य के अधिकार कम करने के आरोप भी लगाए गए हैं। तमिलनाडु में डीएमके के कार्यवाहक अध्यक्ष एमके स्टालिन ने इसे चोरी छिपे हिंदी थोपने की साजिश कहा है। उनका आरोप है कि भाजपा के नेतृत्व वाली केंन्द्र सरकार तमिल भावनाओं का सम्मान नहीं करती। एमडीएमके प्रमुख वाइको ने केंद्र को नए हिंदी विरोधी आंदोलन की चेतावनी दी है। संविधान में हिंदी संघ की राजभाषा है। इसलिए क्षेत्रीय राजनीति की मांगें निंदनीय हैं।

भारत में 100 करोड़ से ज्यादा हिंदी भाषी हैं। भारत के बाहर नेपाल, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, ओमान, दुबई, सऊदी अरब, फिजी, म्यांमार, रूस, कतर, फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका में भी लाखों हिंदी भाषी हैं। भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में हिंदी फिल्मों व टीवी धारावाहिकों का बड़ा दर्शक समुदाय है। दक्षिण भारतीय राज्यों में भी हिंदी का चलन है, लेकिन भाषाई राजनीति की मांगें संकीर्ण हैं। उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रसार को राज्यों के अधिकार छीनने वाला कृत्य कहा है। आरोप है कि केंद्र एक देश, एक धर्म, एक भाषा और एक टैक्स व हिंदी, हिंदु, हिंदुस्तान के विचार लागू कर रहा है। सच यह है कि तमिल या कन्नड़ से हिंदी का कोई बैर नहीं। भारतीय भाषाएं अपनी ही हैं। तमिल या कर्नाटक में राजभाषा हिंदी भी चलेगी तो राष्ट्रीय एकता के बंधन और भी मजबूत होंगे। हिंदी सबको जोड़ने का रससूत्र क्यों नहीं बन सकती, लेकिन हिंदी भाषी भी पूर्ण सजग नहीं जान पड़ते। उत्तर भारत में हिंदी की ही तमाम बोलियों को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग उठती है। बिहार सरकार ने भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में लाने का प्रस्ताव केंद्र को भेजना तय किया है। भोजपुरी हिंदी का ही प्रेमपूर्ण हिस्सा है। मधुरस भीगी भोजपुरी के बिना हिंदी रसहीन होगी। अवधी या बृज को महत्व देने वाले भी ऐसी ही मांग करें तो राजभाषा हिंदी का गौरव अक्षुण्ण कैसे रह सकता है? इस प्रश्न का उत्तर हिंदी भाषियों को ही देना है।

संविधान सभा ने लंबी बहस के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा बनाया था। 15 वर्ष तक अंग्रेजी में ही राजकाज चलाने का प्रावधान भी किया। राजभाषा आयोग बनाने की भी व्यवस्था की गयी। इस आयोग को भारतीय संघ के सरकारी कामकाज के लिए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग और अंग्रेजी के प्रयोग पर रोक आदि के लिए सिफारिश का दायित्व मिला। संविधान (अनुच्छेद 351) में हिंदी का विकास केंद्र का कर्तव्य बताया गया है कि वह हिंदी का प्रसार बढ़ाए। उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में दर्ज अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात कर शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द लेकर हिंदी को समृद्ध करे। हिंदी की समृद्धि और पूरे देश में प्रसार केन्द्र का संवैधानिक कर्तव्य है। क्या केंद्र कुछेक संगठनों या राजनीतिक दलों के दबाव में अपना संवैधानिक कर्तव्य छोड़ दे? राजभाषा विरोधी दल या संगठन आखिरकार संविधान का पालन क्यों नहीं करते?

संविधान सभा ने हिंदी को यों ही राजभाषा नहीं बनाया एनजी आयंगर ने सभा (12.9.1949) में कहा कि हम अंग्रजी को एकदम

नहीं छोड़ सकते। यद्यपि शासकीय प्रयोजनों के लिए हमने हिंदी को अभिज्ञात किया है। पंडित नेहरू ने कहा कि हमने अंग्रेजी इसलिए स्वीकार की कि वह विजेता की भाषा थी। अंग्रेजी कितनी ही अच्छी हो, किंतु हम इसे सहन नहीं कर सकते। 1947 तक अंग्रेजी विजेता की भाषा थी। विजेता अंग्रेज पराजित हो गए। फिर हिंदी विजेता की भाषा क्यों नहीं बनी ? संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि हमने संविधान में एक भाषा रखी है। अंग्रेजी के स्थान पर एक भारतीय भाषा (हिंदी) को अपनाया है। हमारी परंपराएं एक हैं। संस्कृति एक है। भारतीय भाषाओं से हिंदी का कोई विरोध नहीं। सारी भाषाएं और बोलियां भारत की बहुभाषिकता का श्रृंगार हैं। अंग्रेजी भाषा तमिल, तेलुगू, कन्नड़ या मलयालम के सामने कहीं नहीं टिकती। अपनी भाषाएं भारतीय संवाद का माध्यम हैं। राजभाषा के प्रश्न को क्षेत्रीय अस्मिता से जोड़ना असवैधानिक है और राष्ट्रीय एकता का विध्वंसक भी।

हिंदी का क्षेत्र अपने उपयोगिता मूल्य के कारण ही बढ़ा है। फारसी या अंग्रेजी की तरह उसे राज्याश्रय नहीं मिला। बादशाह फारसी चाहते थे, लेकिन अरबी फारसी के अनेक विद्वानों ने भारत की भाषाई पहचान के लिए हिंदी शब्द का ही प्रयोग किया था। अमीर खुसरो ने इसे हिंदवी या हिंदुवी कहा। ईस्ट इंडिया कंपनी हिंदी की उपयोगिता से परिचित थी। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने एक पत्रक (29.9.1830) में कहा था, प्रयुक्त भाषा को वादी, प्रतिवादी वकील और सामान्यजन भी जानें। ऐसी भाषा हिंदी थी। स्वाधीनता आंदोलन की भाषा हिंदी थी। गांधी जी ने एक अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन (1916) में कहा, मेरी हिंदी टुटी-फूटी है। अंग्रेजी बोलने में मुझे पाप लगता है। वायसराय से भी हिंदी में ही बात करो। 1937 में सी राजगोपालाचारी के नेतृत्व वाली मद्रास प्रेसिडेंसी की सरकार ने हिंदी पढ़ाने का आदेश दिया था। इसे राजनीतिक मुद्दा बनाकर आंदोलन भी चला। मद्रास के गवर्नर अर्सकिन ने इस आदेश को वापस लिया था। 1965 तक चले हिंदी विरोधी आंदोलन में भी अंग्रेजी को महत्व दिया गया था। तबसे देश ने तमाम प्रगति की है। हिंदी पूरे देश में फैल चुकी है। भाजपा या केंन्द्र को कोसने के और बहाने भी हो सकते हैं। कृपया संवैधानिक राजभाषा को संकीर्ण राजनीति का मुद्दा न बनाएं। ❐

**✍ हृदयनारायण दीक्षित**

*साभार: प्रात: खबर*

# लौटा दे बच्चों को उनका बचपन...

**✍ जागृति कुमारी**

*कक्षा - बारह 'सी'*

किसी राष्ट्र के भविष्य का आकलन करना हो तो उस राष्ट्र के बच्चों को देखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र के प्राण उसके बच्चों में बसता है। यदि इस दृष्टि से हमारे देश को देखा जाए तो निराशा ही हाथ लगती है। क्योंकि आज देश के अधिकांश बच्चों का भविष्य उनका जीवन संकटपूर्ण है।

अधिकांश बच्चों के पास खाने के लिए पौष्टिक भोजन, रहने के लिए आवास, पहनने के लिए कपड़े और पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं हैं। देश में बहुत से बच्चे बेघर हैं, लावारिस हैं, वे या तो भीख माँगने के लिए मजबूर हैं या किसी आपराधिक गतिविधि में शामिल हैं। हमारे समाज में ऐसे बच्चों के लिए कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है इसलिए उनका भटकना स्वाभाविक है।

देश में आज भी करोड़ों बच्चे, बाल श्रमिकों के रूप में जीवन गुजारते देखे जा सकते हैं। खेत-खलिहानों से लेकर शहर-बाजार की छोटी-बड़ी दुकानों पर, स्टेशनों में, रेलगाड़ियों में उनकी मौजूदगी किसी से छिपी नहीं है। बच्चों का शोषण हर जगह किया जा रहा है लेकिन सच तो यह है कि दोषियों के खिलाफ कोई कड़ी कार्रवाई नहीं हो पा रही है। बच्चे अपने जीवन का आनंद लेना चाहते हैं, खुशियों को खुले मन से पाना चाहते हैं, लेकिन आज की शिक्षा प्रणाली द्वारा उनके मन पर इतना दबाव डाला जाता है कि वे तनाव से घिरे हुए देखे जाते हैं। माता-पिता भी अपने बच्चों पर पढ़ाई के लिए निरंतर दबाब तनाव के कारण व परीक्षाओं में असफल होने पर बच्चे कभी-कभी अवसाद से इतना घिर जाते है कि आत्महत्या तक कर लेते हैं।

इसलिए यह जरुरी है कि बच्चों के मन को समझा जाए, उनकी परेशानियों को जाना जाए, उन्हें अभिभावकों द्वारा पर्याप्त समय दिया जाए और उनके जीवन के सहज विकास के लिए हर संभव प्रयास किए जाएँ। 14 नवंबर बच्चों के बालमन को समझेंगे और उनके जीवन को अशिक्षा से कुपोषण आदि से मुक्त कर सकेंगे और समाज में ऐसी व्यवस्था बना सकेंगें कि हमारे समाज में बच्चों का सही पालन-पोषण हो सके और कोई भी बच्चा स्वयं को उपेक्षित व असहाय महसूस न कर सके। ❐

# प्रकृति की सीख

✍ दुर्गा शंकर पाण्डेय
*कक्षा – छठी 'अ'*

गर्मियों की छुट्टियाँ थी
पापा ने कहा चलो घूम कर आएँ कहीं।
सबने मिलकर योजना बनाई।
चलो घूम आएँ वैष्णो माई।
मम्मी ने तैयारी कर ली
पापा ने टिकट खरीदा
पापा, मम्मी, भईया, दादी
के साथ पहुँच गया जम्मु सीधा
वहाँ पहुँच कटरा में किया गया विश्राम
अगले दिन दर्शन हेतु हमने किया पयान
पैदल–पैदल चलकर
हम सीढ़ी चढ़ते जाते थे
जाते–जाते लोग वहाँ
जयमाता की टेर लगाते थे
आधी यात्रा पूरी करके
पहुँचे अर्धकुमारी।
वहाँ थोड़ा विश्राम किया
थकान लगी थी भारी
पंजीकरण करा वहाँ पर
ऊपर कदम बढ़ाना था
अर्धकुमारी दर्शन करके
माता के भवन में जाना था
माथे पर जय माता की पट्टी थी
मुहँ में जय माता का नारा था
सारा शरीर रोमांचित था
यह परम सौभाग्य हमारा था
गाता रानी का दर्शन कर
जब हम वापस जा रहे थे।
देखा कुछ लोग एक गुफा के द्वार
पर खड़े हो आपस में गुन–गुना रहे थे
मैंने अंदर झाँका तो
पाया कि वहाँ एक कंदरा था
अंधेरा था उसमें और वह काफी सकरा था
लोग उसमें जो बोलते थे
वह उनकी आवाज दुहराता था
उसके इस हरकत पर हम सबको
बहुत मजा तब आता था
मैंने भी उसमें झाँका था
पर ज्योंही अपना मुँह खोला
मैंने जैसे जो बोला।
वही वैसा उसने बोला।
मैं जोर से चिल्लाया – आई हेट यू
अंदर से भी आवाज आया – आई हे यू
इतने में पापा मम्मी भी आ गए
उन्होने मुझको समझाया
जैसा दोगे वैसा पाओगे
प्रकृति का उदाहरण दिखलाया
फिर कहा उन्होने अब बोलो
आई लव यू आई लव यू
अंदर से भी आवाज आई
आई लव यू आई लव यू
पापा ने कहा देको बेटा
प्रकृति ऐसी होती है
उसको जैसा जो देता है
वह भी वैसा ही देती है
हेट करोगे तो घृणा करेगी
लव करोगे तो प्यार।
ऐसे ही अनुभवों से, चलता है ये संसार
प्रकृति जो तुम्हें सिखा रही
यह चलन आज के समाज का है।
जैसा बोओगे, वैसा पाओगे
अनुभवी कथन आज का है।
उस दिन मैंने प्रकृति से
सीखा ये नैतिक पाठ।
नहीं इसे मैं भूलता
लगा लिया है गाँठ। ❑



शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है। – *शिवप्रसाद सितारेहिंद*

# बाप की पीड़ा

✍ **जुराया खानम**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'ब'*

उस बाप की आँख भर आती है
जब वो अपने बेटी को पीड़ा में देखता है।
कन्यादान के वक्त उसकी आँखे फिर भर आती है
पर वे आंसू खुशी के होते हैं।
वो सोचता है, मैं जो आज तक नहीं दे पाया
वो मेरा दामाद देगा
मेरी बेटी बहुत खुश रहेगी।

पर उसकी आँखें फिर रोने पर मजबूर हो जाती है,
जब उसे खबर मिलती है,
"आपकी बेटी अब नहीं रही।"
सोचिए कितना बड़ा सदमा लगा होगा,
उस बाप को
जिसने इतनी खुशी और आशा के साथ
अपने बेटी को उस लड़के के हाथ सौंपा था
जो अब जल्लाद निकला।

सोचिए कितनी पीड़ा पहुंची होगी
उस बाप को
जब उसने सुना कि उस जल्लाद ने इतनी बेरहमी से मारा
कि वह आत्महत्या करने पर मजबूर हो गई
जो अब नहीं रही।

क्या यह न्याय है ?
क्या उसके अंदर दिल नहीं है ?
क्या उसके हाथ थोड़े भी लड़खड़ाए नहीं ?
क्या उसने इतना भी नहीं सोचा
कि उसके बेटी के साथ जब ऐसा होगा तब उसे कैसा लगेगा ?

यह कविता उन लोगों के लिए है,
जो औरतों की इज्जत करना नहीं जानते।
और आखिर में बस इतना कहना चाहूँगी
कि जो औरतों की इज्जत नहीं करता,
वह मर्द नहीं होता।
और जो मर्द नहीं होता
उसका अस्तित्व है ढलता। ❐

# ईश्वर

✍ **साहिल अली**
*कक्षा – ग्यारहवीं 'ए'*
*केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान*

दोष तू तो दोषी मैं
जाम तू मदहोशी मैं
अधूरा तू समृद्ध मैं
जो लोभी तू तो बुद्ध मैं
चले जो तू वो राह हूँ मैं
बना है तू फनाह हूँ मैं
माता हूँ मैं पिता हूँ मैं
कुरान हूँ गीता हूँ मैं

इसामसीह, मैं नानक हूँ
शुहाना हूँ, भयानक हूँ
आकाश हूँ पाताल हूँ
शरीर हूँ कँकाल हूँ।

देव मैं, पिशाच मैं
शमसान का हूँ नाच मैं
कुबेर हूँ फकीर हूँ
नसीब की लकीर हूँ।

तबाह करे वो बाढ़ हूँ
ज्वालामुखी पहाड़ हूँ।
अगर सुन सके तो सुन ले तू।
मैं सिंह का दहाड़ हूँ

तुझमें भरा गुरूर है।
क्यों घमंड में चूर है
भुला दिया क्या तुमने यह
मरना तुझे जरुर है।

किए जो तूने पाप है
रखा मैंने हिसाब है
छिपा नहीं है मुझसे कुछ
खुली तेरी किताब है।

कुकर्म जो तू कर गया
घड़ा जो तेरा भर गया
किया जो तब डरा नहीं
परिणाम से क्यों डर गया।

धरती पे जब मैं आऊँगा
महाप्रलय मचाऊँगा
ना रहेगा वजूद तेरा
सब नाश कर मैं जाऊँगा। ❐

# ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड ने अपने क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के साथ ही अन्य सभी कार्यालयों में प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भारत सरकार के आदेशों के अनुपालन एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन किया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में 01 सितंबर 2017 से 26 सितंबर 2017 तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हिंदी माह समारोह 2017 का आयोजन किया गया। इस दरम्यान विभिन्न वर्गों में अधिकारियों, कर्मचारियों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्यों के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं तथा-स्वरचित कहानी लेखन, हिंदी डिक्टेशन (श्रुतिलेख), आशु भाषण, हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं रिक्त स्थान पूर्ति, क्वीज (प्रश्नोत्तरी) एवं हिंदी स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा दुलियाजान में स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए भी विभिन्न वर्गों में स्वरचित कहानी लेखन, स्वरचित कविता लेखन एवं वर्ग पहेली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को दिनांक 26.09.2017 को आयोजित हिंदी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में विभिन्न गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

समारोह के दौरान सभागार में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने कहा कि अपनी भाषा ही हमारे विचारों की श्रेष्ठ वाहक हो सकती है। उन्होंने कार्यक्रम की शुरूआत माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार के संदेश के वाचन के साथ की। तत्पश्चात ऑयल इंडिया लिमिटेड में हिन्दी और कम्पनी द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

तत्पश्चात सभा को संबोधित करते हुये राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं ऑयल के कार्यकारी निदेशक (मा.सं.एवं.प्र.), श्री प्राणजित डेका ने सर्वप्रथम पुरस्कार विजेताओं को बधाई देने के साथ ही अपने विचारों को रखते हुए कहा कि मनुष्य के पास भाषा एक ऐसी शक्ति है जो उसे अपनी सभ्यता, संस्कृति के संरक्षण एवं अपने राष्ट्र के विकास करने में सहायता प्रदान करती है। स्वभाषा के विकास से मनुष्य के चिंतन मनन व कार्य करने की क्षमता में विकास होता है। हिन्दी भारत की सर्वाधिक व्यवहारिक भाषा होने के कारण राजभाषा के पद पर सुशोभित है। अन्य भाषाओं के वे शब्द जो आम प्रचलन में है उन्हें ज्यों का त्यों अपना लिया जाना चाहिए। हिन्दी शब्दों का भाषिक स्वरूप काम काज की भाषिक जरूरतों को पूरा करने वाला होना चाहिए।

मुख्य वक्ता के रूप में पधारे डॉ. समीर झा, हिन्दी विभागाध्यक्ष, डिब्रू महाविद्यालय, ने मानव जीवन में भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप देकर किसी दूसरे तक अपनी बात आसानी से पहुँचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि संविधान में हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिन्दी भाषा का विकास करने के लिए सभी को मिलजुल कर प्रयास करना चाहिए। कार्यालयीन काम-काज में यथासंभव इसका प्रयोग करना चाहिए ताकि इसका विकास कार्यालयी क्षेत्र में भी पूरी तरह हो सके।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के आवासी मुख्य कार्यपालक श्री बी. पी. शर्मा ने हिन्दी की दिशा एवं दशा पर अपने विचार व्यक्त किए। अपना विचार व्यक्त करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि किसी भी भाषा का ज्ञान सदैव लाभदायक होता है। हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, अतएव इसका सम्मान व विकास करना हमारा कर्तव्य है परन्तु इसके साथ ही अन्य भाषाओं को भी सम्मान देना चाहिए। आप जितनी भाषा सीख सकते हैं, सीखने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र और जन हित में हमें सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी तथा राज्यों के कामकाज में उनकी प्रांतीय भाषा का भी समावेश करना चाहिए।

तत्पश्चात इस माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजयी अधिकारियों/कर्मचारियों, नराकास के सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं के बीच पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम संपन्न हुआ और साथ ही ऑयल की प्रतिष्ठित अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं अंतर विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता क्षेत्रों/विभागों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। जन कार्य विभाग के उप महाप्रबंधक (सी एस आर), श्री एस. के. चक्रवर्ती के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संचालक डॉ. शैलेश त्रिपाठी द्वारा कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई। ❑

# हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँ

स्वरचित कहानी लेखन प्रतियोगिता

हिंदी डिक्टेशन (श्रुतिलेख)प्रतियोगिता

आशु भाषण प्रतियोगिता

हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं रिक्त स्थान पूर्ति प्रतियोगिता

क्वीज (प्रश्नोत्तरी)प्रतियोगिता

विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए प्रतियोगिताएँ

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में निरंतर रचनात्मक सहयोग के तदर्थ
**श्रीमती अनिता निहालानी** को 'विशिष्ट प्रशस्ति पत्र' साभार प्रदान किया गया।

ऑयल इंडिया लिमिटेड का क्षेत्र मुख्यालय प्रत्येक वर्ष अपने अन्तर-क्षेत्रीय कार्यालयों एवं क्षेत्र मुख्यालय में विभिन्न विभागों के मध्य राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभाग एवं कार्यालय को ऑयल की प्रतिष्ठित राजभाषा शील्ड प्रदान करता है, इस वर्ष इस शील्ड के विजेता है।

## अंतर- क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी तथा कोलकाता कार्यालय, कोलकाता दोनों ही कार्यालय को अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

## अंतर- विभागीय राजभाषा शील्ड

प्रथम- क्षेत्र संचार विभाग

द्वितीय- अनुसंधान एवं विकास विभाग

तृतीय- रसायन विभाग

## हिंदी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

# पाइपलाइन विभाग में हिन्दी माह समारोह- 2017 का आयोजन

भारत सरकार के गृह मंत्रालय अंतर्गत राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर, 2017 से पाइपलाइन विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी माह समारोह, 2017 का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ 01 सितम्बर, 2017 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब में हिन्दी माह समारोह-2017 का उद्घाटन एवं राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन से हुआ जिसमें गुवाहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक डॉ. अच्युत शर्मा तथा हिन्दी अखबार दैनिक पूर्वोदय के सम्पादक श्री रविशंकर रवि क्रमश: बतौर मुख्य वक्ता एवं अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे।

महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा तथा आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर हिन्दी माह समारोह-2017 का विधिवत् उद्घाटन किया। 'बदलते परिवेश में हिन्दी का महत्व' शीर्षक पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथि द्वय ने अपने सारगर्भित विचारों से सभागार में उपस्थित सभी को प्रेरित किया।

04 सितम्बर, 2017 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब में अधिकारियों कर्मचारियों, कॉलोनी की महिलाएं तथा कॉलेज के छात्र-छात्राओं और विभिन्न वर्गों के स्कूली बच्चों के बीच हिन्दी कविता पाठ एवं स्कूली बच्चों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

06 सितम्बर, 2017 को पाइपलाइन के पंप स्टेशन नं. 3 (जोरहाट) में हिन्दी माह समारोह - 2017 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। स्टेशन प्रभारी, उप महाप्रबंधक (प्रचालन) श्री दिलीप कुमार सैकिया, आमंत्रित मुख्य अतिथि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, जोरहाट शाखा के राजभाषा अधिकारी श्री अजय कुमार सिंह एवं पाइपलाइन मुख्यालय के उप प्रबंधक (रा.भा) पाला श्री नारायण शर्मा ने बारी-बारी से भोगदोई क्लब के सभागार में उपस्थित लोगो को संबोधित किया। हिन्दी भाषा की उपयोगिता और राजभाषा के रूप में दैनन्दिन कार्यालयी काम-काज में इसके प्रयोग को बढ़ाने की तीनों वक्ताओं ने अपील की। कार्यक्रम का संचालन उप प्रबंधक (रा.भा) के तत्वावधान में श्री कामेश्वर सॉव, मुख्य अभियंता (पाला अनुरक्षण) ने किया। बच्चें, गृहिणीयां एवं अधिकारी व कर्मचारयों की उत्साह पूर्वक भागीदारी ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। खुला मंच प्रश्नोत्तरी का संचालन श्री अनुप मुसाहारी, वरिष्ठ अभियंता (पाला दूरसंचार) द्वारा सफलता पूर्वक किया गया।

11 सितम्बर, 2017 को पंप स्टेशन नं. 8 (सोनापुर) में हिन्दी माह समारोह-2017 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का भी सफल आयोजन सोनापुर क्लब के सभागार में हुआ। उप महाप्रबंधक (प्रचालन) एवं स्टेशन प्रभारी श्री मुकुल चौधुरी, विचारक के रूप में आमंत्रित सोनापुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के दो अध्यापकों क्रमश: रीना पाठक, दिलावर हुसैन एवं पाइपलाइन के उप प्रबंधक (राजभाषा) पाला श्री नारायण शर्मा ने सभागार में उपस्थित लोगों को बारी- बारी से संबोधित किया। श्री शर्मा ने संपर्क भाषा, व्यवसायिक भाषा में हिन्दी के बढ़ते हुए महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी दूसरे पायदान पर है। राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के दिशा-निदेशों का उल्लेख करते हुए श्री शर्मा ने कार्यालयीय काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने का आग्रह किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में क्वीज मास्टर के रूप में वरिष्ठ विद्युत अभियंता (विद्युत एवं कैथोडिक) श्री गंगा राम डेका ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

16 सितम्बर, 18 सितम्बर, एवं 19 सितम्बर 2017 को पाइपलाइन मुख्यालय में क्रमश: विभिन्न वर्गों में हिन्दी कविता पाठ, बच्चों के लिए श्रुतलेख, खुलामंच प्रश्नोत्तरी (क्वीज), अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख, आशुभाषण प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

25 सितम्बर, 2017 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब सभागार में उपराह्न 1-30 बजे से हिन्दी माह समारोह-2017 का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र) के कार्यालय प्रमुख एवं अनुसंधान अधिकारी श्री बदरी यादव मुख्य अतिथि एवं हिन्दी शिक्षण योजना (पूर्वोत्तर क्षेत्र) के सहायक निदेशक डॉ. बी एन पांडे सम्मानित अतिथि के तैर पर आमंत्रित थे। महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) प्रभारी श्री अशोक कुमार दत्त ने अपने संबोधन में पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी के नियम और अधिनियम के अनुपालन की स्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ावा देना चाहिए। आमंत्रित अतिथि द्वय को हिन्दी का प्रखर विद्वान बतलाते हुए उन्होंने सभागार में उपस्थित लोगों से कहा कि दोनों विद्व-जनों के विचारों से हम सभी लाभान्वित होंगे। आमंत्रित अतिथि द्वय ने ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं क्रमिक विकास पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्र की एकता अखण्डता में हिन्दी भाषा की महती भूमिका है। क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण की वकालत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा को हमें बेहिचक-बेझिझक प्रयोग करना चहिए। श्रीमंत शंकरदेव का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि असम को शेष भारत से और शेष भारत को असम से परिचित कराने के लिए उन्होंने उस समय एक भाषा की आवश्यकता महसूस की थी और ब्रजावली भाषा के प्रचलन में लाया था। आज विश्व की अनेक भाषाएं लुप्त होने की कगार में है। अत: भाषा संरक्षण में हमें सचेत और सजग रहना चाहिए।

हिन्दी माह समारोह-2017 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कुल 81 पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र और नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

अंत में उप महाप्रबंधक पाला (प्रशासन) श्री हिरेण चन्द्र बोरा के धन्यवाद ज्ञापन करने एवं शारदीय दूर्गोत्सव की शुभकामनाएं अर्पित करने के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ। ❐

# ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा समारोह आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गतिमान बनाने के उद्देश्य से 01 सितंबर से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं दिनांक 18 सितंबर, 2017 को पखवाड़ा का समापन राजभाषा समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। श्री सुशील चन्द्र मिश्र, कार्यकारी निदेशक (रा.प.), श्री जयंत कुमार बरगोहांई, पूर्व आवासी मुख कार्यकारी, श्री माधुर्ज्य बरुआ, मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं क.सं.) के साथ साथ राजस्थान परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया। राजभाषा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर

डॉ. छोटा राम कुमार। श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासीन गण्य–मान्य व्यक्तियों के साथ–साथ उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने की। उन्होंने अपने भाषण में दैनन्दिन कार्य में राजभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग में लाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व प्रोफेसर डॉ. छोटा राम कुमार ने कहा कि हिन्दी भारत की अधिकांश जनता की प्यार की जनभाषा है। हिन्दी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह सभी भाषाओं को अपने में मिलाकर, अपना बनाकर चलती है। इससे शब्दभंडार में विस्तार हुआ है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के समानान्तर हिन्दी का तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में अधिक प्रयोग होने लगा है। डॉ. कुमार ने ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए गए कार्यों की सराहना की। इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित अनुवाद, निबंध, श्रुतिलेख, आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह के दौरान डॉ. मुकेश विश्वास, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी द्वारा खुला मंच प्रश्नोत्तरी का भी संचालन किया गया। श्री अजय कुमार मीणा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के आभार प्रकट के साथ समारोह का सफल समापन हुआ। ❐

# ऑयल, कोलकाता कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01-09-2017 से 15-09-2017 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कई प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। आशुभाषण प्रतियोगिता, कार्यालयीन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता, कम्प्यूटर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। पखवाड़ा का उद्घाटन एक दिवसीय यूनीकोड हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 04.09.2017 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 14 कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विशेष रूप से श्री अनूप कुमार, सहायक निदेशक (तकनीकी) बतौर संकाय उपस्थित हुए. उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित अधिकारियों ने उठाया तथा अपने कंप्यूटर पर राजभाषा हिंदी में सुगमतापूर्वक कार्य करने के लिए मददगार हिंदी सॉफ्टवेयरों संबंधी जानकारी प्राप्त की। दिनांक 20-09-2017 को भव्य समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। खचाखच भरे कर्मचारी रिक्रीएशन हॉल में कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री ए पॉल ने मुख्य अतिथि श्री एन के दुबे, उप निदेशक (कार्यान्वयन) सहित सभी उपस्थित विद्वजनों का स्वागत किया तथा सभी कार्मिकों से अपील की कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी कहा कि कोलकाता कार्यालय के अधिकांश कार्मिक हिन्दीतर भाषी हैं परंतु राजभाषा हिंदी के प्रति अपना प्रेम दिखाते हुए पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उनके द्वारा अपने काम हिन्दी में करने का प्रयास सदैव किया जाता है और बात प्रशंसा के लायक है। उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय के अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय में प्राप्त होने वाले पत्रों पर हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं तथा उन पर

किसी साहित्य की नकल पर कोई साहित्य तैयार नहीं होता। – *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

टिप्पणी भी हिन्दी में लिखने का यथासम्भव प्रयास करते है। उन्होंने कार्यालय के कार्मिकों को विशेष रूप से बधाई दी कि उन सभी के साझा प्रयास की बदौलत कोलकाता कार्यालय को 12-08-2017 को लगातार चौथे वर्ष पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी के करकमलों से हिन्दी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर मिला। कार्यक्रम के दौरान श्री एस के चौधुरी, श्री जी पी साहा, श्री गोपाल चक्रवर्ती, श्री अमोल भट्टाचार्य, श्री शुभेन्दु चट्टोपाध्याय, श्री विल्सन, श्री मानवेन्द्र चौधुरी, श्री सुमंत चटर्जी, श्री पी के घोष, श्री विश्वनाथ चटर्जी, श्री सरोज सोनोवाल, श्री अमिताभ मजुमदार, श्री अविजीत बनर्जी तथा श्री सुबीर पाल द्वारा हिंदी कविताएं / हिंदी गीत प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। ❐

# ऑयल, दुलियाजान द्वारा हास्य कवि संगम का आयोजन

5 दिसंबर 2017 : ऑयल इंडिया लिमिटेड, जन संपर्क विभाग, राजभाषा अनुभाग द्वारा क्षेत्र मुख्यालय के दुलियाजान क्लब में देश के महान कवियों के साथ सफल हास्य कवि संगम 2017 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश के महान कवि डॉ. कुमार विश्वास, श्री संपत सरल, श्रीमती पद्मिनि शर्मा, श्री रोहित शर्मा व श्री दिनेश बावरा ने भाग लेकर दुलियाजान के दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. वी एम बरेजा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी दर्शकों का स्वागत करते हुए किया। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बी. पी. शर्मा, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल एवं श्री प्राणजित डेका, कार्यकारी निदेशक (मा.सं. एवं प्र.) के साथ ही सभी कवियों के स्थान ग्रहण एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अपने संबोधन में श्री प्राणजित डेका ने कहा कि आज के दिन हमारे लिए गौरव का दिन है कि देश के प्रसिद्ध कवि देश के इस सुदूर अंचल में हमारे मध्य विद्यमान हैं जिनसे आज हम रूबरू होकर इनकी कविताओं एवं व्यंगबोध का आनंद उठा सकेंगे। श्री बी. पी. शर्मा ने भी जन संपर्क विभाग एवं राजभाषा अनुभाग को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों की

मेहनत से ही यह संभव हो सका है। कवियों के प्रति भी उन्होंने अपना धन्यवाद ज्ञापित किया।

तत्पश्चात मंच की हास्य कवि के संचालन के लिए कवियों को सौंप दिया गया। श्री रोहित शर्मा ने तीखे व्यंगबाज के माध्यम से कवियों का परिचय करवाया और इस परिचय क्रम में ही दर्शक हंसी से लोट-पोट होने लगे। प्रथम कवि के रूप में श्री दिनेश बावरा ने आम जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं को व्यंगमय करके दर्शकों के सामने परोसा। श्रीमती पद्मिनी शर्मा ने अपने गीतों एवं शायरी के माध्यम से दर्शकों का मन मोह लिया। श्री संपत सरल ने अपने राजनैतिक एवं सामाजिक व्यंग से दर्शकों को हंसने के साथ ही उन पर विचार करने के लिए भी विवश कर दिया। और अंत में डॉ. कुमार विश्वास ने अपनी वाक्पटुता एवं चातुर्य के साथ दर्शकों को अपने गीतों के माध्यम से इतना आह्लादित किया कि पूरा प्रेक्षागृह उन्हीं के रंग में रंग गया।

अंत में महाप्रबंधक (जन संपर्क) श्री दिलीप कुमार भूयां के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही हास्य कवि संगम, 2017 का औपचारिक समापन हुआ। ❒

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 32वीं बैठक संपन्न

दिनांक 30 अक्टूबर, 2017 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 32वीं बैठक संपन्न हुई। दुलियाजान और उसके आस पास के क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों आदि सदस्य कार्यालयों ने उक्त बैठक में भाग लिया। उक्त बैठक की अध्यक्षता, कार्यकारी निदेशक (मा. सं. एवं प्र.) श्री प्राणजित डेका, ऑयल ने की। डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने सभी सदस्य कार्यालयों का स्वागत करते हुए बैठक का शुभारम्भ किया।

श्री डेका की अध्यक्षता में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन क्षेत्र में हो रही प्रगति की समीक्षा की गई और वर्ष 2017-18 के राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया गया। इसके अलावा धारा 3 (3), राजभाषा नियमों का अनुपालन, तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रेषण, कम्प्यूटर को यूनिकोड सक्षम बनाना एवं उस पर हिंदी में कार्य करना, हिन्दी कार्यशाला का आयोजन, पत्र-पत्रिका का प्रकाशन के संबंध में भी चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त गुवाहाटी के राजभाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित होने वाले तकनीकी संगोष्ठी में सहभगिता के लिए सदस्य कार्यालयों के साथ चर्चा की गई।

श्री प्राणजित डेका, कार्यकारी निदेशक (मा. सं. एवं प्र.), ऑयल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विभिन्न कार्यालयों से पधारे प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि हम चाहते हैं कि बैठक में सभी सदस्य कार्यालय उपस्थित हों जिससे की बैठक की सार्थकता एवं निर्णयों में गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने अपने भाषण में सभी सदस्य कार्यालयों को आश्वस्त करते हुए कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग से संबंधित जो भी कार्य किए जा रहे हैं या किए जाएंगे, उन सब में आप सभी सदस्य कार्यालय सादर आमंत्रित हैं। आप सभी के सहयोग से ही हम राजभाषा के लिए कुछ गुणवत्तापूर्ण कार्य कर सकते हैं। साथ ही सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि आप सभी अपने-अपने कार्यालय के लिए राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को सीढ़ी दर सीढ़ी के हिसाब से निर्धारित करें एवं उन्हें प्राप्त करने की पूरी कोशिश करें।

अंत में बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए डॉ. त्रिपाठी ने बैठक के औपचारिक समापन की घोषणा की। ❒

रामचरित मानस हिंदी साहित्य का कोहनूर है। - *यशोदानंदन अखौरी*

# ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को "प्रथम राजभाषा शील्ड" से सम्मानित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर द्वारा 'प्रथम राजभाषा शील्ड' से सम्मानित किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे, जधपुर के सम्मानित मंडल रेल प्रबंधक श्री गौतम अरोरा एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक श्री निदेशक नरेंद्र मेहरा महोदय के करकमलों से ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक श्री सुनील कुमार मिश्र, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन एवं श्री सुनील व्यास, प्रशासन विभाग ने दिनांक 29 नवम्बर, 2017 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जोधपुर में आयोजित नराकास बैठक के दौरान यह शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया। ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर लगातार तीन वर्षों से राजभाषा कार्यान्वयन में प्रथम स्थान पर है। ❑

# कोलकाता कार्यालय को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यन्वयन के लिए पुरस्कार

## *डॉ. वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रशस्ति फलक*

दिनांक 12-08-2017 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक एवं राजभाषा समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2016-17 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए, समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, राज्यपाल पश्चिम बंगाल के कर कमलों द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रसंगित पुरस्कार लगातार चौथे वर्ष प्राप्त करना कार्यालय की उपलब्धि है।

इसके अतिरिक्त इस महत्वपूर्ण अवसर पर खचाखच भरे सम्मेलन कक्ष में विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अध्यक्षों, निदेशकों की उपस्थिति में डॉ. वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) को कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए "प्रशस्ति फलक" भी प्रदान किया गया। कोलकाता कार्यालय की ओर से कार्यालय के श्री ए. पाल, महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) एवं डॉ. वी एम बरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

स्मरण रहे कि वर्ष 2013-14, 2014-15 तथा 2016-17 में भी कोलकाता कार्यालय द्वारा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल किया गया था।

*महामहिम राज्यपाल पश्चिम बंगाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी से राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए श्री ए. पाल, महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) एवं प्रशस्ति फलक ग्रहण करते हुए डॉ. वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.)*

# ऑयल, राजस्थान, जोधपुर में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में दिनांक 05-06 सितंबर, 2017 को हिन्दी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में एक दो दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र, महाप्रबंधक (भू विज्ञान) श्री निरोद रंजन हजारिका, उप महाप्रबंधक (टी.एस) श्री अभिजीत दाम एवं मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं क.स.) श्री माधुर्ज्य बरुआ के साथ-साथ परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग देने हेतु एवं कार्यशाला में बड़े उत्साह के साथ भाग लेने हेतु आभार प्रकट किया।

कार्यशाला के दौरान अनुवाद एवं श्रुतिलेख के ऊपर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कार्यशाला का संचालन सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री अभिषेक दुबे ने किया। ❐

# कोलकाता कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 11-08-2017 को कोलकाता कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक दिवसीय उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर विशेष रूप से क्षेत्र मुख्यालय से कार्यपालक निदेशक (मा. सं. एवं प्रशासन) श्री प्राणजित डेका, विशेष वक्ता के रूप में, श्री एन के दुबे, उप निदेशक (कार्यान्वयन), पूर्व क्षेत्र तथा श्री कैलाश नाथ यादव, सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित हुए। जबकि कार्यशाला में स्वागत भाषण कोलकाता कार्यालय के महाप्रबंधक श्री ए. पाल द्वारा प्रस्तुत किया गया। आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि कोलकाता कार्यालय हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सदैव गम्भीर रहा है तथा इसी के परिणामस्वरूप कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2016-17 के लिए नराकास कोलकाता द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की जा रही है। कार्यशाला में शामिल हुए अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए विशेष वक्ता सहित आमंत्रित अतिथियों ने हिंदी कार्याशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री प्राणजित डेका ने दुलियाजान में ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा चलाई जा रही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उपलब्धियों तथा समिति द्वारा हिंदी प्रचार प्रसार के किए जा रहे नवीन प्रयासों की जानकारी दी। श्री एन के दुबे ने कोलकाता कार्यालय द्वारा हिंदी कार्यान्वयन द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री के एन यादव ने कहा कि कोलकाता नराकास के मंच पर राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाते रहे हैं और नराकास को कई बार इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड मिली है। महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं से कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी तथा उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है। दुलियाजान कार्यालय के सहायक हिंदी अधिकारी डॉ. शैलेश कुमार त्रिपाठी ने अधिकारियों को गूगल के माध्यम से हिंदी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद तथा हिंदी टंकण संबंधी जानकारी दी। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया। नामांकित अधिकारियों को हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित रूचिकर पाठ्य सामग्री वितरित करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। ❐



हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया। - *डॉ. राजेंद्र प्रसाद*

# राजभाषा अधिनियम, 1963

(यथासंशोधित, 1967)

(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी, उपबन्ध करने के लिए अधिनियम। भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो –

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ –
   (1) यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।
   (2) धारा 3, जनवरी, 1965 के 26 वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबन्ध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केंद्रीय सरकार, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबन्धों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी।
2. परिभाषाएं इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ अन्यथा अपेक्षित न हो,
   (क) 'नियत दिन' से, धारा 3 के सम्बन्ध में, जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है।
   (ख) 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।
3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना –
   (1) संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,
   (क) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी, तथा
   (ख) संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी :

   परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगी :

   परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा :

   परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा।
   (2) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा –
   (i) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच।
   (ii) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच।
   (iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच।

   प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का

कर्मचारीवृंद हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही –

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किये जाते हैं।

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए।

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्रारूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएगी।

(4) उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय, विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं उनका कोई आहित नहीं होता है।

(5) उपधारा (1) के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (4), के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

(4) राजभाषा के सम्बन्ध में समिति –

(1) जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।

(2) इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमश: लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(3) इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएग।

(4) राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हो तो उन पर विचार करने के पश्चात उस समस्त प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा :
परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे।

(5) केन्द्रीय अधिनियमों आदि का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद –

(1) नियत दिन को और उसके पश्चात शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित –

(क) किसी केन्द्रीय अधिनियम का या राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित किसी अध्यादेश का, अथवा

(ख) संविधान के अधीन या किसी केन्द्रीय अधिनियम के अधीन निकाले गए किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का हिन्दी में अनुवाद उसका हिन्दी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

(2) नियत दिन से ही उन सब विधेयकों के, जो संसद के किसी भी सदन में पुन:स्थापित किए जाने हों और उन सब संशोधनों के, जो उनके सम्बन्ध में संसद के किसी भी सदन में प्रस्तावित किए जाने हों, अंग्रेजी भाषा के प्राधिकृत पाठ के साथ-साथ उनका हिन्दी में अनुवाद भी होगा जो ऐसी रीति से प्राधिकृत किया जाएगा, जो इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित की जाए।

(6) कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधिकृत हिन्दी अनुवाद –
जहां किसी राज्य के विधानमण्डल ने उस राज्य के विधानमण्डल द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में प्रयोग के लिए हिन्दी से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां, संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) द्वारा अपेक्षित अंग्रेजी भाषा में उसके अनुवाद के अतिरिक्त, उसका हिन्दी में अनुवाद उस राज्य के शासकीय राजपत्र में, उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से, नियत दिन को या उसके पश्चात प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसी किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिन्दी में अनुवाद हिन्दी भाषा में उसका प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

(7) उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग –
नियत दिन से ही या तत्पश्चात किसी भी दिन से किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकेगा और जहां कोई निर्णय, डिक्री या आदेश (अंग्रेजी भाषा से भिन्न) ऐसी किसी भाषा में पारित किया या दिया जाता है वहां उसके साथ-साथ उच्च न्यायालय के प्राधिकार से निकाला गया अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी होगा।

(8) नियम बनाने की शक्ति –

(1) केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।

(2) इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाए तो तत्पश्चात वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात यह निस्प्रभाव हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निस्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(9) कतिपय उपबंधो का जम्मू-कश्मीर को लागू न होना धारा 6 और 7 के उपबंध जम्मू कश्मीर राज्य को लागू न होंगे। ❐

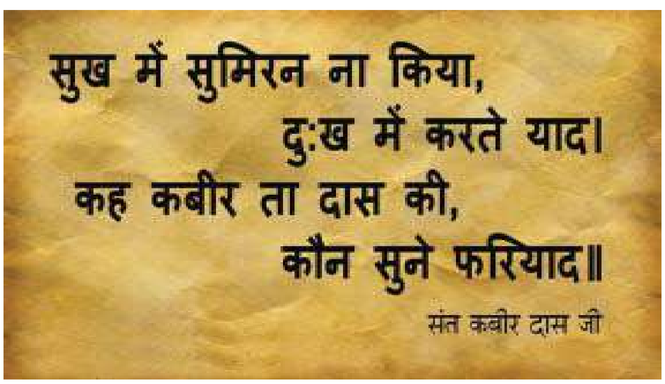

ডিগবই বাতৰি

# Digboi Batori

House Journal of the Assam Oil Company

VOL. V — DIGBOI, FEBRUARY 1958. — No. 2

SPORTS DAYS

Full Results In Next Month's Issue

## OUTLOOK : BRIGHT

ONE of the things that happen when an announcement about the formation of a new oil company is made is that other oil companies around the world sit up and take notice. And one of the first questions they ask is: "What are the new concern's prospects?"

Happily, Oil India will be able to give a most satisfactory reply to such questions. For a unique feature of this new company is that it starts off with the proof that oil in commercial quantity exists underground—as confirmed by most of the 36 deep wells drilled in the different areas it will develop.

Oil companies do not usually start that way; they usually have to risk their money in looking for *possible* deposits—and often this takes years and a lot of "dead" expenditure on dry holes. The AOC can justly feel proud of the part it played in discovering Nahorkatiya and Moran, but the high price it has had to pay, in costly failures in other parts of Assam, should not be overlooked.

Now a lot more money will be spent, and possibly risked, by the new venture. Much more work has to be done, and aside from drilling wells there are roads to be constructed, jungles to be cut, rivers bridged, houses built and communications of all kinds installed or improved. The laying and equipping of the pipe line to carry O.I.L.'s crude just to the first (Assam) refinery will be higher than average for such projects in India because of the distance from supply and materials bases.

In a way, therefore, the task in Assam remains the same as it was before the new venture was formed. More oil must still be found, and more capital provided for developing the fields. But now there is this important difference. With the signing last month of the agreement to form Oil India a bold business partnership has been established, in which the party controlling the concessions joins hands with the party possessing the skills, experience, and organisation for their development to the common good.

Such a combination of resources promises a bright future, and it is our fervent wish that Fortune may continue to smile on the new company.

Such a partnership is, moreover, truly in accord with times, and—as was graciously acknowledged in New Delhi last month—adaptability to changing conditions has always been a strong feature of our long life and work in India.

## BORN LAST MONTH—A NEW OIL COMPANY WITH PROVED ASSETS AND A FINE FUTURE!

# OIL INDIA LIMITED

### IN THIS ISSUE

Scenes of the operational areas in the Assam Valley where the new rupee company, Oil India Ltd., will work are pictured on pages 6 and 7.

* * *

Sardar Swaran Singh's visit to Assam Oil Industry—Page 5.

* * *

State Governor drills a Moran Well—Page 4.

* * *

Pictures of our pavilion in the Congress exhibition held at Gauhati—Page 9.

## "GOOD LUCK TO O. I. L."

*An unexpected but nonetheless pleasing feature of the Oil India Ltd. agreement signing ceremony in New Delhi on 14th January was the speech of welcome and good wishes to the new company made by Sri N. R. Pillai, Secretary General to the Ministry of External Affairs, Government of India.*

*After all the documents had been signed Sri Pillai said: "We have just witnessed a signing ceremony the effect of which will have an important impact on India's economic life. Few concerns have had such a long experience in India as Burmah Oil.....Apart from efficiency the most essential factor in any concern is adaptability to the changing times, and the company has shown itself capable of that. The fact the BOC has come to a co-operative arrangement with the Government is a matter of very great gratification to all of us, and we wish good luck and a good future to the new company."*

*Sri Pillai's remarks were greeted with applause, and then*

*(Continued in Page 3)*

## NEXT STEP IS REGISTRATION AND INCORPORATION

WITH AIR reconnaissance over the Assam section of the pipe line route completed and the new rupee company agreement signed, Oil India Ltd. now awaits incorporation and registration formalities before it is invested with its assets and embarks on the next stage of development of the oil resources of Nahorkatiya, Hugrijan and Moran.

Thirty-six wells have been drilled in what will become O.I.L.'s area to date and the new company's first operational task will be to arrange pipe line facilities to transport crude oil from the area to the terminal of the proposed public sector refinery in Assam. Construction work on this formidable undertaking cannot however begin until a detailed ground survey of a likely pipe line route, including studies of possible Brahmaputra River crossing, has been made—whereupon the consultants' final report on the project will be considered by the Government of India.

Meanwhile, to save as much time as possible, plans are being considered by the A.O.C.'s parent company (The Burmah Oil Company Ltd.) for pipe, pumping station equipment and other materials required for the transportation of O.I.L.'s crude oil to the Assam Refinery.

As announced by Sardar Swaran Singh, Minister for Steel, Mines and Fuel, in the Lok Sabha in December, Oil India Ltd. will construct pipe line facilities from the new areas all the way to Barauni, in North Bihar (where the second public sector refinery will be erected), the foreign exchange cost of providing the pipe line to the first, or Assam, refinery being loaned to O.I.L. by the B.O.C.

*(Continued in Page 3)*

# हमारी विरासत

DRILLING IN NAHORKATIYA, ASSAM COEXISTS WITH PADDY FIELDS

THE DRILLING FLOOR IN THE EARLY 1900s.

DEVELOPMENT OF DIGBOI OILFIELD; 1923

DRILLING WELL COVERED BY THATCH IN DIGBOI; 1905

SEISMIC SURVEY SHOTS IN UPPER ASSAM; 1930

DIGBOI OILFIELD IN 1910

DIGBOI NAHORKATIYA ROAD UNDER CONSTRUCTION IN 1955

उज्ज्वला योजना

पहल
अपना धन पाओ, जन धन बचाओ

#GiveItUp
Feel the Joy of Giving

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर